आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" जनवरी 2022

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 40
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

। वर्ष –23 । अंक–01 । पौष/माघ मास । जनवरी 2022

अनेकता में एकता ही हमारी शान है।
इसीलिए तो हमारा भारत महान है।।

happy New Year

2022

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुख-पत्र

17वीं पुण्यतिथि

जिंदगी के अंधेरों में वो जलती मशाल थे,
मुसीबतों से बचाने को वो परिवार की ढाल थे,
कहां जी पाये थे वो अपनी जिन्दगी अपने हिसाब से
पिता हमारे कोई आम शख्स नहीं त्याग की एक मिसाल थे.

स्व. श्री महेन्द्र प्रकाश चौबे

जन्म 30.11.1932 | स्वर्गवास 30.01.2005

श्रद्धांजली

डॉ. चारुलता चौबे
स्प्रींग वुड स्कूल
स्कीम न. 36 के पास, इंडस्ट्रियल एरिया के पीछे, नीमच (म.प्र.) 458441

(र.क्र. 2021/789)

द्वितीय पुण्यतिथि

स्व. श्रीमती नीरज चतुर्वेदी

पत्नी श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी

30 जून 1955 - 31 जनवरी 2020

नलिन - अनिता
रोहित - रुचिका
प्रतीक - मोनिका
राकेश - अमिता
निशांत
शांति, पदम - रेणू

शोक संतप्त परिवार

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी

नोमिका - अमित , मोनिका- तुषार,
दिव्यांशु - ईशा, मास्टर ईशान

श्रीमती मधु
प्रशांत - हिमानी
मुकेश - सुधा
अपूर्वी - हिमांशु
अंशुमान - प्राजित

निवास : ई-103 विवेक विहार, सेक्टर- 82, नोयडा (उ.प्र.) - 201304

मो. : 98711-70559

(र.क्र. 2021/804)

हमको मिला है
एक संविधान,
जिसमे है हमारा
सुखी विधान।
Bharatgas
Bharat Petroleum
COOK FOOD. SERVE LOVE.
73वा
ग ण तं त्र
दि व स
राष्ट्रीयता का पर्व 'गणतंत्र दिवस' हमें उत्साह,
जोश, सम्मान, ख़ुशी, सद्भाव और
देश प्रेम की भावना का महत्त्व सिखाता है।
इस गौरवपूर्ण मौके पर आओ
सब मिलकर भारत को अखण्ड बनाए,
प्यार और सिर्फ प्यार बढ़ाये।
लोकतंत्र की
'रेखा' चिरायु हो...
रेखा गॅस
एजन्सी
दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495.
E-mail : rekhagas20032003@rediffmail.com
www.malhar.org

(र.क्र. 2021/802)

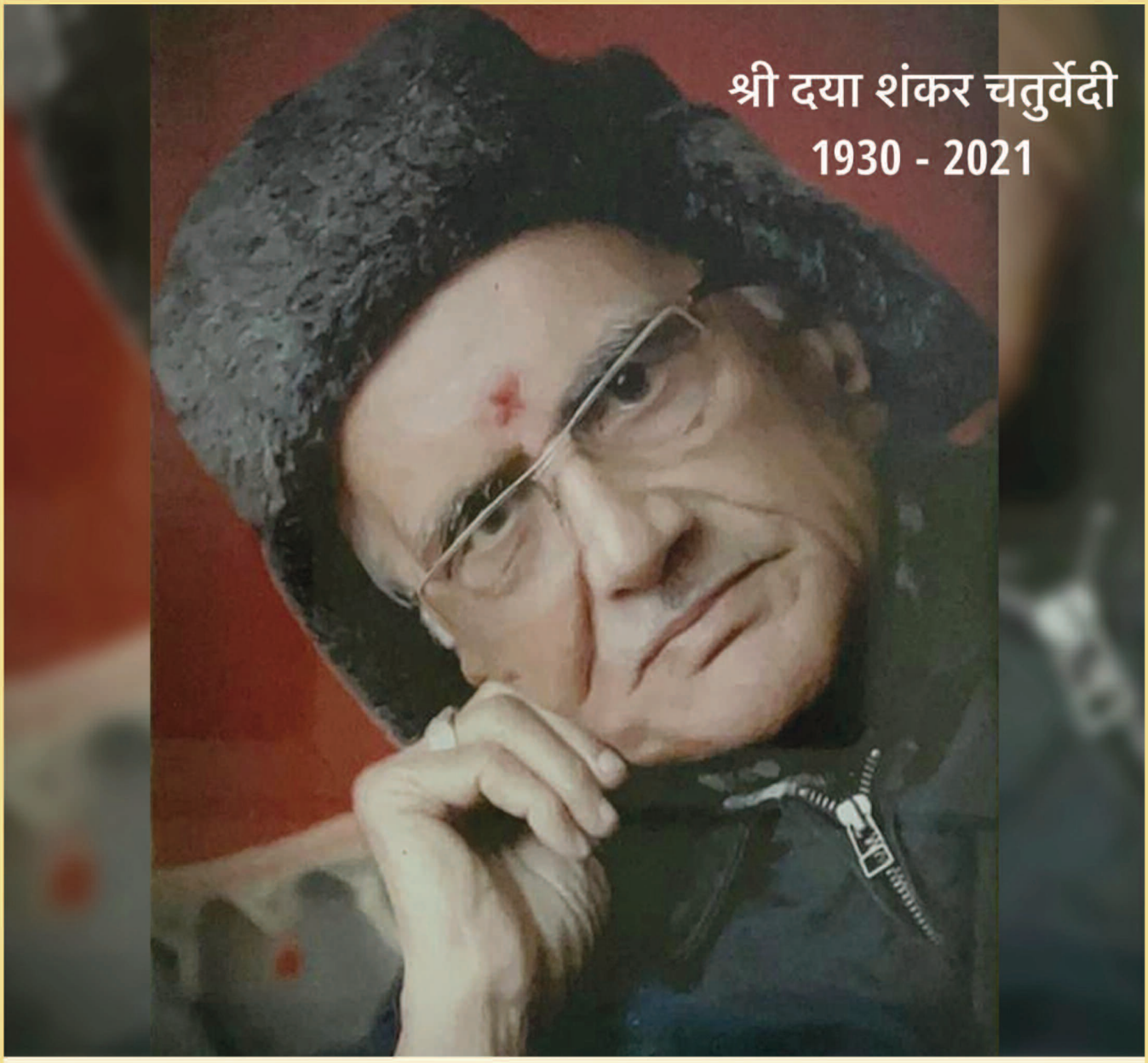

अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि

स्व. कक्का खरगराम चतुर्वेदी (होलीपुरा) के सुपुत्र श्री दयाशंकर चतुर्वेदी, कानपुर का स्वर्गवास, 91 वर्ष की आयु में, दिनांक 17/10/2021 को, उनके निवास स्थान 3/120, लक्ष्मी भवन, विष्णुपुरी, कानपुर में हो गया ।

श्रद्धानवत

सम्पूर्ण कक्का परिवार

राजीव-संजीव चतुर्वेदी द्वारा अपने स्वर्गीय पिता श्री दयाशंकर जी के नाम 24,000/- रु.

अन्नपूर्णा योजना में सप्रेम भेंट दिए ।

(र.क्र. 2021/773)

एक पोत बोलिए टेढ़ी टांग वाले की जय...

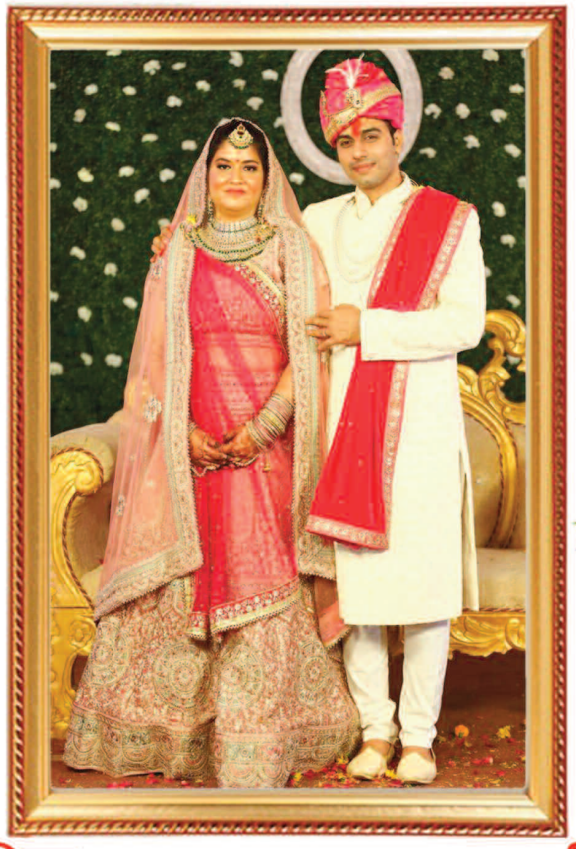

सौ. तुषिता
सुपौत्री– श्री महेश चन्द्र जी
एवं स्व. गिरिजा देवी
सुपुत्री– श्री अतुल कुमार
एवं श्रीमती विभा (मैनपुरी/लखनऊ)

एवं

चि. मेहुल
सुपौत्र– स्व. रमेश चन्द्र जी
एवं श्रीमती मिथिला देवी
सुपुत्र– श्री शिवकुमार
एवं श्रीमती अनुपम (जहांगीरपुर/अंकलेश्वर)

का शुभ विवाह
28 नवंबर 2021 को भरुच (गुजरात) में संपन्न हुआ।

नवदम्पत्ति को स्नेहाशीष सहित

डॉ. मनोज (चाचा), राजीव–नीलिमा (चाचा–चाची), नीलम (बुआ) नम्रता–विवेक (बुआ–फूफा),
तुहिना–नलिन (जीजी–जीजा), आरुषि एवं तन्मय, रुद्रांश, शांतनु (बहन एवं भाई)
एवं समस्त परिवार

ननिहाल

स्व. ज्वाला प्रसाद जी एवं स्व. सावित्री जी (नाना–नानी– सिकन्दरपुर) – दैविक आशीष
श्रीमती निशा पत्नी स्व. कमल, दिलीप–सुचित्रा (मामा–मामी)
श्रीमती कनक जी – श्री त्रिलोकी नाथ जी (मौसी–मौसा)
निशांत–अदिति, रजत–अनीता, शलभ–सुरभि (भाई–भाभी) शालिनी–अंकुर (जीजी–जीजा)
एवं समस्त परिवार

महेश चन्द्र चतुर्वेदी, 3, नेहरू नगर, लखनऊ।
मो.: 8887601437, 983917492, 9839275592, 9307057493

(र.क्र. 2021/796)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	8
संपादकीय	9
अभिनंदन 2022	11
संपूर्ण भारत में मकर संक्रांति	17
हल्दी-महत्वपूर्ण औषधि	21
चाय	23
बेजुबान किताबें	26
जीवन	27
संध्या मिश्रः एक महीन संतुलन	29
शाखा समाचार	32
शोक समाचार	34

अंक 01
जनवरी, वर्ष - 23

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

वर्ष 2021 कोरोना की कड़वी यादों के साथ समाप्त हो गया। जीवन के नए अनुभव के साथ समाप्त हो गया। जाते जाते यह हमें अनेक सबक सिखा गया। शीत लहर अपने चरम पर है। देश में हर तरफ कड़कड़ाती ठंड का प्रकोप देखने को मिल रहा है। अनेक शहरों में जगह जगह अलाव व गर्म कपड़ों की व्यवस्था की जा रही है। हर व्यक्ति ठंड से बचाव अपने अपने तरीके से कर रहा है। इस समय हमें अपने बुजुर्गों का अधिक ख्याल रखने की आवश्यकता है।

संपूर्ण समाज के सहयोग से अन्नपूर्णा कोष मैं निरंतर वृद्धि हो रही है इसमें अभी तक राशि 6,32,100/- रूपये एकत्र हो चुके है। इसी के साथ हमारी गुल्लक योजना के अंतर्गत भी शैने शैने धन एकत्र हो रहा है। इसमें अभी तक 61, 517/- रुपए की राशि एकत्र हो चुकी है।

भाई भरत जी (रिषड़ा) के द्वारा महासभा के 100 वर्ष के इतिहास का भागीरथी प्रयास अपने अंतिम चरण में पहुंच गया है। इसके प्रकाशन हेतु आप सभी से सहयोग की अपेक्षा है। आप अपने प्रतिष्ठान व बुजुर्गों की स्मृति में विज्ञापन यथाशीघ्र प्रदत्त सूचना में दिए बंधुओं से संपर्क कर भेजने की कृपा करें।

विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी महासभा के कैलेंडर का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसे यथाशीघ्र आप लोगों को उपलब्ध कराया जाएगा।

मकर संक्रांति व गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !!!

अपील

महोदय,

हर्ष का विषय है कि चतुर्वेदी महासभा ने अपनी यात्रा के सौ वर्ष पूर्ण कर लिए है।इस वर्ष महासभा अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रही है।कोरोना महामारी के कारण सभा वृहद समारोह तो आयोजित नही कर सकी है,लेकिन अपने शताब्दी वर्ष मे महासभा द्वारा वर्चुअली नियमित कार्यक्रम किये जा रहे है।इसी सन्दर्भ मे कार्यसमिति ने शताब्दी वर्ष को अक्षुण बनाने हेतु एक स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया है।स्मारिका मे सभा की स्थापना से लेकर अबतक की यात्रा का पूरे लेखाजोखा के साथ ऐतिहासिक एवं कीर्ति परख आलेख भी समाहित किए जायेगे।

अतःआपसे निवेदन है कि स्मारिका मे निम्न दर पर श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के नाम चैक द्वारा भुगतान कर अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देने की कृपा करे। खाता विवरण

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा बचत खाता न.1006238340 आई एफ एस कोड- CBIN0283533 सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, ब्रांच- आनंद विहार,दिल्ली

विज्ञापन दरें

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-
द्वितीय एवं तृतीय कवर	20000/-
रंगीन फुल पृष्ठ	11000/-
श्वेत श्याम फुल पेज	8000/-
श्वेत श्याम हाफ पेज	5000/-
श्वेत श्याम चौथाई पेज	3000/-
शुभकामना चार लाइन	1100/-

संपर्क

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी(सभापति) 9873395001
भरत चतुर्वेदी (संयोजक) 7059086775
मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी(मंत्री) 09871170559
शशांक चतुर्वेदी (संपादक) 09826086879

संपादकीय

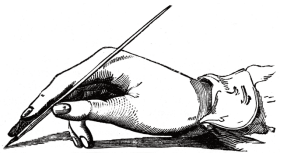

वर्ष 2021 अपने खट्टे मीठे अनुभवों के साथ गुजर गया। यह वर्ष नए तरीके से जीवन जीने की विद्या भी सिखा गया। हम लोग अपने जिन जीवन मूल्यों को छोड़कर भौतिकता वादी दौड़ में चल पड़े थे। इस कालखंड ने हमें वापस अपने मूल सिद्धांतों पर लौटने के लिए विवश कर दिया। पुराने समय में नियमित दिनचर्या, घर का सात्विक भोजन, सादगीपूर्ण जीवन के साथ समाज सेवा, मानव सेवा व मानवता की जीवन मूल्यों को पुनः याद दिला गया। जीवन की इस भौतिकतावादी युग में जीवन की अंधाधुन्ध दौड़ व रफ्तार के बीच दो पल सोचने विचारने का सबक भी गया।

विगत वर्ष की ढली है रात, नए साल की नई हो बात।
पुरानी निराशाओं को हरे, नई उमंगों से हृदय भरे।
प्रिय जनों के संग रहे मगन, अंगना बिखरे आनंद के रंग।
जीवन में सीखे सबक हर पल, साथ रहे आप और हम हिलमिल।
आशा का नवीन सूर्य उदित हो, नववर्ष की शुभकामना विदित हो।।

वर्ष 2022 नई उम्मीद, उमंग, आशा व विश्वास के साथ आया है। हमारा जीवन पहले की तरह फिर से अपनी गति को प्राप्त करेगा। बच्चे पुनः स्कूल व कॉलेजों की ओर निकल पड़े हैं। शादी विवाह व उत्सव की धूम धाम का माहौल पुनः प्रारंभ हो चुका है। नव वर्ष की उत्साह, जोश व उम्मीद में हमें अभी भी सतर्कता रखनी होगी।

चंद्रिका के इस अंक में पूर्व में प्रकाशित व वर्तमान में प्राप्त नव वर्ष की मंगल - कामनाओं के साथ देशभर में संक्रांति के स्वरूप पर लेख के साथ चित्रा की चाय की चुस्कियां, उषाजी की बेजुबान किताबें व मनोज जी के जीवन सूत्र आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। दिलीप जी की हल्दी आपके ज्ञान में वृध्दि अवश्य करेगी। इसके साथ हमारे स्थायी स्तंभ आपको सामाजिक जानकारियों से अवगत कराएंगी। निकट भविष्य में कुछ विशेषांक निकालने का विचार है। जिनमें से प्रथम "झरोखा" विशेषांक है। जिसमें चतुर्वेदी चंद्रिका में पूर्व में प्रकाशित अनेक उत्कृष्ट लेखों का समायोजन किया जाएगा।

चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित आप अपने संग्रह में से ऐसे लेख हमें भेजने का कष्ट करें। महिला कितनी भी उम्र दराज हो जाए लेकिन मायके की मधुर स्मृतियां उसकी मन मस्तिष्क के पटल पर सदा अंकित रहती हैं। मायके मे वह सदा बेटी ही रहती है। जिस को ध्यान में रखते हुए हम लोग एक विशेषांक "मेरा पीहर मेरा गाँव" निकालने का विचार कर रहे हैं। जिसमें मायके से जुड़ी अपने मूल गाँव से जुड़े खट्टे मीठे अनुभव व मधुर स्मृतियों को आपके चित्र के साथ लगभग 350 शब्दों में संजोकर हमें शीघ्र भेजने की कष्ट करें। इसमें आपको अपने मूल गाँव के संस्मरणों को उल्लेखित करना है। प्रकाशन सामग्री एकत्र होने के उपरांत इस अंक को प्रकाशित किया जाएगा।

विगत वर्ष में पत्रिका के प्रकाशन में सभापति प्रदीप जी के मार्गदर्शन के साथ-साथ मुनींद्र नाथ जी (मंत्री, महासभा), डॉ. कुश जी (इटावा), भरत भाई (रिषड़ा), महेश जी (दिल्ली) अम्बर पांडे (भोपाल), अभय राज जी (गुरुग्राम) का विशेष सहयोग रहा।

महासभा संरक्षक डॉ. सतीश जी (नागपुर), दिलीप जी (जलगांव), भुवनेश जी (गोंदिया) ने सम्पूर्ण वर्ष विज्ञापन देकर सहयोग किया। विज्ञापन एकत्र करने में प्रदीप लालन जी का सहयोग भी उल्लेखनीय है। इसके साथ ही वर्ष भर अपनी लेखनी से सहयोग हेतु श्रीमती उषा जी(भोपाल), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), कैलाश जी (कासगंज), दिलीप सिकंदरपुरिया जी (लखनऊ), डॉ. कुश जी (इटावा), डॉ. बीना जी (जयपुर), डॉ. ऋषभ जी (देहरादून), बीना मिश्र जी (हैदराबाद), अलका चौबे जी (मुंबई) का सतत सहयोग प्राप्त हुआ है।

विगत वर्ष में आप सभी के विभिन्न सहयोग हेतु आभार। मुझे विश्वास है कि आप सभी के साथ सम्पूर्ण समाज का सतत सहयोग व आशीर्वाद इसी तरह प्राप्त होता रहेगा।

हार्दिक मंगलकामनाओं के साथ!!!!

- शशांक चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी "रज्जन" (कोलकाता) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका – श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर – शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन), श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री आलोक चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

अभिनंदन 2022

जय बोलो नए साल की

कालेधन की बर्फ पिघल गई जय बोलो नए साल की
यादों की भी हवा निकल गई जय बोलो नए साल की।
सीबीआई के छापों में तोपें तक मिसमार हुई
दिल्ली की दीवार दहल गई जय बोलो नए साल की।
झाड़ू कचरे-कूड़े को फैलाकर फोटो रोज़ खिंचाते हैं।
की औकात बदल गई जय बोलो नए साल की।
अच्छे दिल की धुन पर यारों तोते कोरस गाते हैं।
हकलों की आवाज संभल गई जय बोलो नए साल की।
काशमीर का राम अलापें इडली डोसेवाले लोग
इनकी भी आवाज बदल गई जय बोलो नए साल की।
बेइज्जत लोगों में रहकर अपनी इज्जत कचरा है
ई-रिक्शा से कार बदल गई जय बोलो नए साल की।
पहन-ओढ़कर घर से निकली जब भी नीरव महँगाई
धन्नों सी हर बार मचल गई जय बोलो नए साल की।

– **पं. सुरेश नीरव,** गाजियाबाद

-0-

बदल गया इक साल

एक रात में बदला सा कुछ बदल गया इक साल।
कल तक लगा कलेण्डर देखो बदल गया तत्काल।।

गये साल की वे सब बातें चिन्ताओं में गुजरी रातें।
रोये साल भर बेकारी से अम्मा पीड़ित बीमारी से।।
बाबा चिन्तित मंहगाई से कक्का झगड़ रहे ताई से।
नहीं दीखता तनिक प्रेम था पैसा झगड़े की देन था।

चाल-चलन कुछ ऐसा बिगड़ा फैला बदनियती का जाल।
एक रात में बदला सा कुछ बदल गया इक साल ।।

दिल्ली के चुनाव की आंधी बने स्वार्थ के साधन गांधी।
भाषण सुन बांधी उम्मीदें गद्दी मिली न टूटी नीदें।।
पार लगी न अपनी नैया खूब विदेशन घूमे भैया।।।

काला धन की बाट जोहते कब होंगे मालामाल।
एक रात में बदला सा कुछ बदल गया इक साल ॥

खाते खुल गये खूब दनादन पर गरीब को मिला न कुछ बन
जैसे घर थे वैसे घर हैं उम्मीदों के घायल पर है।
खेतों पर काबिज़ दबंग है सत्ता अन्यायी के संग है।।।

नहीं मलाई पूरी चहिये दो गरीब को रोटी दाल
एक रात में बदला सा कुछ बदल गया इक साल।।
कुछ अच्छी बातें भी कर लेमन अपना कुछ हल्का कर लें।
पहुंच गये हम चंदा मामा दुनिया में बांधा फिर झामा।।
घाटी में भारी मतदान गूंजा लोकतंत्र का गान।।।

पीएम जब हिन्दी में बोले यूएनओ में उठा हमारा भाल।
एक रात में बदला कुछ बदल गया इक साल।।

वाहन का ईंधन कुछ सस्ता रेल सफर में हालत खस्ता।
नक्सल और आतंकी हमलेशासन के तेवर कुछ बदले।
रोज बदलता डॉन ठिकाना मुश्किल उसका पानी खाना।।।
सत्यार्थी ने नोबुल पाया झूम उठा हर लाल।
एक रात में बदला सा कुछ बदल गया इक साल।।

कुछ अच्छे से सपने पाले बुरी नजर हम कहीं न डाले।
मानवता के हित हम जी लें देश प्रेम की मंदिरा पीलें।।
भेदभाव को दूर भगायें सब मिलकर यह देश बनायें।।।
नये साल में भगवन कर दो हम सबको खुशहाल।
एक रात में बदला सा कुछ बदल गया इक साल।

– **डॉ. कुश चतुर्वेदी,** इटावा।

-0-

मुक्तक

हर नई भोर से सुख का संचार हो।
और हर शाम खुशियों का भंडार हो।
मिलकर नव वर्ष में हम कुछ ऐसा करें,
शन्ति ही शान्ति हो प्यार ही प्यार हो।

नव वर्ष का हर दिन सुदिन, हर मास मधुमान हो।
हर घड़ी हर पल हृदय में, परम हर्ष उल्लास हो।
जिन्दगी भर प्यार से यु ही भरा आँचल रहे,
यू हर कदम पर इक नई आशा नया विश्वास हो।

–0–

कुंडलियाँ

मंगलमय सबके लिए, होय मित्र नव वर्ष।
धन–धान्य से पूर्ण हो अपना भारत वर्ष।
अपना भारत वर्ष बने फिर वैभवशाली।
अमन–चैन चहुंओर सर्वदा हो।।
कह'यतीश' कविराय, सदा हो भारत की जय।
दुष्ट धरा से मिटे वर्ष नव को मंगलमय।

वर्ष नया लेकर आए खुशियों मित्र अपार।
तरह–तरह की कर हो और आपका द्वार
और आपका द्वार सदा प्रसन्न रहे मन।
स्वस्थ रहे परिवार, सुखी हो सबका जीवन।।
कहतीश' कविराय, रकम से भरा रहे पर्स।
खुशी–खुशी सबसे कहो, मंगलमय नववर्ष।।

– **यतीश चतुर्वेदी राज,** लखनऊ

–0–

नववर्ष का अभिनंदन

सूरज की किरणों ने
बिखेर दिया है
धरा पर कितना सुख
कितना उजास
नववर्ष आया है लेकर
आज सबके जीवन में
नव उल्लास
छूट गए कुछ स्वप्न अधूरे
विगत वर्ष जो हुए न पूरे
आज फिर लें
एक संकल्प नया
उदास चेहरों पर लायेंगे
कलियों की मुस्कान नई
चिराग ज्ञान का हो हाथ हमारे
जले ज्योति शिक्षा की घर–घर
शूल राह के हम दूर हटायें
फूलों सा महके सबका जीवन
हो हताश गये जीवन से जो अपने
पाठ कर्म का उन्हें पढ़ाये
हर दिन एक नई उम्मीद
लिए नया सबेरा आये
जगमग सुबह हो उनकी
घोर अंधेरा छंट जाये
नूतन वर्ष जीवन में सबके
खुशियों की सौगात बिखेरे
यही कामना यही भावना लेकर
नूतन वर्ष का हम करें अभिनन्दन
नूतन वर्ष का करें अभिनन्दन

– **श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी,** ग्वालियर

–0–

नववर्ष

नवजीवन में नव आशा से, नव नूतन कुछ कर्म करे
नव भक्ति से नव शक्ति से, शुभ नया वर्ष प्रारम्भ करें।
नयी सोच हो नये इरादे नव सरिता की गागर हो
लक्ष्य नये आयाम नये, नव अभिलाषा का सागर हो।
नव बाते हो नव किस्से हो, पर पीपल वही पुराना हो
हो ताल नयी हो राग नये, पर मन में वही तराना हो।
हो नया जोश हो नया सफर, नव नौका हो नव धारा हो
नव रिश्ते हो नव जीवन के पर प्रेम पुरातन प्यारा हो
जो बीत गया सो बीत गया, अब अमित नया संघर्ष करे
नव खुशियों से नव चाहत से, शुभ नया वर्ष प्रारम्भ करें।

– **अमित चतुर्वेदी,** मथुरा

–0–

उम्मीदों का नया साल

साल दर साल वक्त चलता रहा
सूरज सिर पर आग उगलता रहा
जिस्म, मेहनत की भट्टी में जलता रहा
खून पसीना बन–बन पिघलता रहा
हसरतें तो पंख फैलाती दिखी
पर उम्मीदों का दामन छलता रहा
चागों में सब रिश्ते तो कहाँ जुड़े
हर धागा गाँठ दर गाँठ उलझता रहा
होसला नहीं छोड़ा है उसने आज तक
इसीलिये हर फैसला कल पर टलता रहा
वक्त के बीतने की रफ्तार कम न हुई 'अरमान'
चांदनी भोर तक फैलती रही तो
सूरज हर शाम यस डलता रहा
इस साल उस साल की आमद का है मुंतज़रि
जब भारत भी इंडिया से मिल पायेगा
कभी तो होगी यह महाभारत भी खत्म
विश्वगुरु का तब पुर्नजन्म हो जायेगा
जब मुफलिसों को भी मिलेगा उनका हक

उनका भी हर बच्चा स्कूलों का जायेगा
बस इसी उम्मीद पर है दुनिया टिकी हुई
बस यही ख्वाब हर नजर में पलता रहा।

– **विकास चतुर्वेदी,** जयपुर

–0–

नये साल में क्या-क्या बदले

नए साल में क्या–क्या होगा ?
वही कहानी वही तमाशे
सच्चाई पर नहीं पड़ेंगे,
क्या झूठों के रोज तमाचे ?
पीली सरसों के घोड़े पर,
चढ़ वसंत फिर–फिर आ जाता।
मेरे घर के लगा सामने,
आम कभी ना बौराता।
बड़े शहर की किसी सार में,
गाय भैंस अब नहीं रंभाते।
तथाकथित छोटे आँगन में
कार बाईक अब बाँधे जाते।
दुनिया को तो ना बदल पाएँ
या नए साल में हम कुछ बदलें।
सड़क गली में नहीं दिखेंगे,
क्या अब नहीं भिखारी बच्चे ?
गाँव शहर में नहीं बचेंगे,
डाकू, गुंडे चोर उचक्के ?
नये साल में बदल ना पाए।
कुछ हम अब बदलें ?

– **शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी,** फिरोजाबाद

–0–

नववर्ष मंगलमय हो

आज है नभ नील कितना
नील है नम आज कितना
छोड़ दे ओ बावरे मन
मन ही मन
मन में सिमटना।।

सुन न पाया दूर वन में
प्राण कोकिल का कुहुकना?
अरूण नव किसलय का देखा
डाल पर थिर–थिर थिरकना?
तरूण रावे का सांझ प्रति को
हृदय में सरिता के मिटना?
प्रीति–पुलकित बुलबुलों का
जूही झुरमुट में पुलकना।
छोड़ दे ओ बावरे मन
मन ही मन मन में सिमटना
तरु की गोरी बाँहें फैली
निर्मली नीलम गगन में
नापने को चकित सी
है विष्णु का विस्तार कितना?
धवल पाँखों को पसारे,
उड़ चली बक पाँत सर्–सर्
झाँकने को क्षितिज से
है दूर और मधुमास कितना?
देख ले पागल उदासी,
नील है नभ आज कितना!

– **डॉ. चित्रा चतुर्वेदी 'कार्तिका'**

–0–

नया साल नई उम्मीद का

नया साल नई उम्मीद का
नई चाल और नई अरुणोदय का।
उड़े विहग निश्चय जोश का,
नई उमंग संशय होश का।
आशाओं के उच्च सफर का,
संगठित हो जय ध्वनि का।
भाईचारे की मिसाल का,
आया साल नई उम्मीद का।
कृषक और जन सामान्य का,
विश्वास प्रगति और उत्थान का।
खुशनुमा वक्त ललाट का,
शुभकामनाएं शुभ सफर का।
नया साल नई उम्मीद का!!!!!

– **शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी,** फिरोजाबाद

–0–

मैं हूँ ना सुख

ऐ सुख तू कहाँ मिलता है
क्या तेरा कोई पक्का पता है
क्यों बन बैठा है अन्जाना
आखिर क्या है तेरा ठिकाना
कहाँ कहाँ ढूंढा तुझको
पर तू न कहीं मिला मुझको

ढूंढा ऊँचे मकानों में
बड़ी बड़ी दुकानों में
स्वादिष्ट पकवानों में
चोटी के धनवानों में
वो भी तुझको ही ढूंढ रहे थे
बल्कि मुझको ही पूछ रहे थे
क्या आपको कुछ पता है
ये सुख आखिर कहाँ रहता है ?

मेरे पास तो दुःख का पता था
जो सुबह शाम अक्सर मिलता था
परेशान होके शिकायत लिखवाई
पर ये कोशिश भी काम न आई
उम्र अब ढलान पे है
हौसला अब थकान पे है

हाँ उसकी तस्वीर है मेरे पास
अब भी बची हुई है आस
मैं भी हार नही मानूंगा
सुख के रहस्य को जानूंगा
बचपन में मिला करता था
मेरे साथ रहा करता था
पर जबसे मैं बड़ा हो गया
मेरा सुख मुझसे जुदा हो गया
मैं फिर भी नही हुआ हताश
जारी रखी उसकी तलाश
एक दिन जब आवाज ये आई
क्या मुझको ढूंढ रहा है भाई
मैं तेरे अन्दर छुपा हुआ हूँ
तेरे ही घर में बसा हुआ
मेरा नहीं है कुछ भी मोल
सिक्कों में मुझको न तोल

मैं बच्चों की मुस्कानों में हूँ
पत्नी के साथ चाय पीने में
परिवार के संग जीने में
माँ बाप के आशीर्वाद में
रसोई घर के पकवानों में
बच्चों की सफलता में हूँ
माँ की निश्छल ममता में हूँ

हर पल तेरे संग रहता हूँ
और अक्सर तुझसे कहता हूँ
मैं तो हूँ बस एक अहसास बंद।
कर दे तू मेरी तलाश

जो मिला उसी में कर संतोष
आज को जी ले कल की न सोच
कल के लिए आज को न खोना
मेरे लिए कभी दुखी न होना
मेरे लिए कभी दुखी न होना।।

– **प्रदीप चतुर्वेदी लालन,** आगरा

–0–

मोबाइल प्रेम

यह देखो यह नारी शक्ति, मोबाइल की करती भक्ति
कर्ण फूल सम लीड लगाती, गाने सुनती और सुनातीं।।
किसमे इतनी हिम्मत है जो जाकर इनको यह समझाए।
कर्ण फूल यह नहीं, शूल हैं, जो कानों की शक्ति घटायें।।
युवा कए पथ में टकराते, कानो में हैडफ़ोन लगाते।
नाच-नाच कर हमें रिझाते, खुद में माइकलजैक्सन पाते।।
गर इतनी प्रतिभा है तुम में जाकर देश का मान बढ़ाओ।
चलते-फिरते कही रह पर मत अपना अपमान कराओ।।
जब भी पिताजी घर पर आते, कानों में ब्लूटूथ लगाते।
बचे मन मसोस रह जाते, मन की बात नहीं कह पाते।।
ऐसा भी क्या काम जरुरी,बच्चों की खुशियों से ज़्यादा।
अच्छा होता काम सभी नित, ऑफिस में निपटा कर आते।।
पति देव जब घर पर आते, पत्नी मोबाइल संग पाते।
चीख चीख कर वह थक जाते, पत्नी नहीं थके बतियाते।।
इतना ही बतियाना है तो ,चाय की चुस्की संग बतियाओ।
कुछ उनका तुम हाल सुनो और कुछ अपना भी हाल बताओ।।
बच्चों को मोबाइल प्यारा,लगता किसी खिलोने जैसा।
और मात पिता को लगता ऐसा, पुत्र मिला वैज्ञानिक जैसा।।
पर हे बच्चों के भाग्य विधाता, इतने तो बन जाओ ज्ञाता।
मोबाइल से गहरा नाता,बच्चों को भारी पड़ जाता।
श्रवण शक्ति को ये कम करता,नयनो की ज्योति ले जाता।।

– **राघव चतुर्वेदी,** फरीदाबाद

–0–

आँग्ल नववर्ष सुभकामना

आपके विचारे भये, काज पूरन होंय सिगरे।
आप स्वस्थ-सुखी रहौ, आँग्ल नववर्ष में।
आपकी कीर्ति और, वैभव में वृद्धि होय।
मान-सम्मान बढ़ै, आँग्ल नववर्ष में।

सत्रु'न कौ नाश होय, भले मित्र बनें नित्य।
हँसते-मुस्कराते रहौ, आँग्ल नववर्ष में।
आप सुभ कार्य'न में, व्यस्त और मस्त रहौ।
अटल भाग्य प्रबल बनै, आँग्ल नववर्ष में।

– **अटल राम चतुर्वेदी,** मथुरा

–0–

बोलौगे सब डॉक्टर, पर ये संत समान।
जो बच्च'न के रोग कौ, कर रए सुखद निदान।
कर रए सुखद निदान, आगरा रहवे वारे।
निखिल जान लो नाम, चतुर्वेदी ये प्यारे।
सुविधा ते दो फीस, मनुजता क्या तोलौगे ?
दवा कहूँ ते लेउ, अटल अब क्या बोलौगे ?

– **अटल राम चतुर्वेदी,** मथुरा

–0–

बनै चतुरी घरवारी

घरवारी भोजन बना, पहलें हमें खबाय।
जैसें दवा प्रयोग कूँ, बंदर दियौ बनाय।
बंदर दियौ बनाय, रैसिपी ढूँढ़त रहवै।
तीखे-मीठे स्वाद, जीभ अपनी सब सहवै।
कम-ज्यादा कर नौन, परीक्षा लेय हमारी।
अटल किरानौ फूँक, बनै चतुरी घरवारी।

– **अटल राम चतुर्वेदी,** मथुरा

–0–

दीप

जलता हुआ दीप ,
मुस्कुरा कर कहने लगा।
त्याग का परिणाम मेरे,
तिमिर अब छँटने लगा।

काली अमावस रात को,
ज्योतित जो करने मैं चला।
मिट गया मैं स्वयं लेकिन ,
आलोकित जगत को कर गया।

दीपक बना है घर मेरा ,
बाती बनी है आत्मा।
प्राण देकर मुझमे देखो,
है तेल बना परमात्मा।

मिट भले ही मैं गया ,
संदेश ये दे चला अमर।
त्याग और बलिदान से ,
निश्चय मिटेगा अब तिमिर।

हाँ मगर दुनिया का देखा ,
ये गजब मैने चलन।
जग जब होगा आलोकित ,
मेरा भला कब होगा मनन ?

इमारतों की तारीफ में,
ईंट नींव की छिपती सदा।
कौन भला है सोचता ,
बिन नींव बनी, इमारत कहाँ ?

स्वार्थपर देखा है मैने ,
इन्सान बेहद पास से।
रात को आँचल से ढकते,
प्रातः हैं ठोकर मारते।।–2

– **मोहन (सूर्य कान्त) चतुर्वेदी**, रिसड़ा

–0–

मैं हूँ ना सुख

ऐ सुख तू कहाँ मिलता है
क्या तेरा कोई पक्का पता है
क्यों बन बैठा है अन्जाना
आखिर क्या है तेरा ठिकाना
कहाँ कहाँ ढूंढा तुझको
पर तू न कहीं मिला मुझको
ढूंढा ऊँचे मकानों में
बड़ी बड़ी दुकानों में
स्वादिष्ट पकवानों में
चोटी के धनवानों में
वो भी तुझको ही ढूंढ रहे थे
बल्कि मुझको ही पूछ रहे थे
क्या आपको कुछ पता है
ये सुख आखिर कहाँ रहता है ?

मेरे पास तो दुःख का पता था
जो सुबह शाम अक्सर मिलता था
परेशान होके शिकायत लिखवाई
पर ये कोशिश भी काम न आई
उम्र अब ढलान पे है

हौसला अब थकान पे है

हाँ उसकी तस्वीर है मेरे पास
अब भी बची हुई है आस
मैं भी हार नही मानूंगा
सुख के रहस्य को जानूंगा
बचपन में मिला करता था
मेरे साथ रहा करता था
पर जबसे मैं बड़ा हो गया
मेरा सुख मुझसे जुदा हो गया
मैं फिर भी नही हुआ हताश
जारी रखी उसकी तलाश
एक दिन जब आवाज ये आई
क्या मुझको ढूंढ रहा है भाई
मैं तेरे अन्दर छुपा हुआ हूँ
तेरे ही घर में बसा हुआ
मेरा नहीं है कुछ भी मोल
सिक्कों में मुझको न तोल

मैं बच्चों की मुस्कानों में हूँ
पत्नी के साथ चाय पीने में
परिवार के संग जीने में

माँ बाप के आशीर्वाद में
रसोई घर के पकवानों में
बच्चों की सफलता में हूँ
माँ की निश्छल ममता में हूँ

हर पल तेरे संग रहता हूँ
और अक्सर तुझसे कहता हूँ
मैं तो हूँ बस एक अहसास बंद।
कर दे तू मेरी तलाश

जो मिला उसी में कर संतोष
आज को जी ले कल की न सोच
कल के लिए आज को न खोना
मेरे लिए कभी दुखी न होना
मेरे लिए कभी दुखी न होना।।

– **प्रदीप चतुर्वेदी लालन,** आगरा

–0–

एक गुलाब, खुशबू अपार।
नित्य नए करे श्रृंगार।।
बिखरे खुशबू हजार।
प्रकृति करे जिसका संचार।।

अविस्मरणीय है जिसका प्यार।
सेवा भाव है जिसका आधार।।
ऐसा है हमारा गुलाब।।

– **अमित चतुर्वेदी,** ब्यावर

–0–

हां मैं गुलाब हूं, हां मैं गुलाब हूं।
हां मैं गुलाब हूं, हां मैं गुलाब हूं।।

दिखाता हूं कई रूप में, बिखेरता खुशियां हजार हूं,
नित्य नए स्वप्न दिखाता, मन में कई बार आता हूं,
हां मैं गुलाब हूं हां मैं गुलाब हूं।।

मन में कोई भाव नहीं सेवा में कोई अभाव नहीं,
सबका करता समान श्रृंगार हूं, फैलाता खुशबू अपार हूं,
हां मैं गुलाब हूं हां मैं गुलाब हूं।।

खुशबू और कांटों का मैं साथ निभाता हूं,
खुशी और गम दोनों में साथ आता हूं,
हां मैं गुलाब हूं हां मैं गुलाब हूं।।

रिश्तो को अनमोल बनाता,
सब को एक समान बतलाता हूं,
एक धागे में सबको पिरोता मालाओं का मैं ही आधार हूं,

हां मैं गुलाब हूं हां मैं गुलाब हूं।।

आत्मा और परमात्मा के बीच दूरी में ही बतलाता हूं,
मानो तो मैं खुशबू और ना मानो तो गुलाब हूं,
हां मैं गुलाब हूं हां मैं गुलाब हूं।।

– **अमित चतुर्वेदी,** ब्यावर

संपूर्ण भारत में मकर संक्रांति
संक्रांति यानी संगक्रांति

- पूज्य पांडुरंग शास्त्री आठवले

संक्रांति का उत्सव नि:सर्ग का उत्सव है। पौष महीने में सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। इसलिए इस उत्सव को मकर संक्रांति कहते हैं। इस दिन सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करने की दिशा बदलता है। थोड़ा उत्तर की ओर ढलता जाता है। इसलिए इसको उत्तरायण भी कहते हैं। संक्रांति का उत्सव निसर्ग का उत्सव है। पौष महीने में सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, इसलिए इस उत्सव को मकर संक्रांति कहते हैं। इस दिन सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करने की दिशा बदलता है। थोड़ा उत्तर की ओर ढलता जाता है। इसलिए इस काल को उत्तरायण भी कहा जाता है। सूर्य के संक्रमण के साथ-साथ जीवन का भी संक्रमण जुड़ा हुआ है। इसलिए इस उत्सव का सांस्कृतिक दृष्टि से भी अनोखा महत्व है। तमसो मा ज्योतिर्गमय अंधकार में से प्रकाश की ओर प्रयाण करने की वैदिक ऋषियों की प्रार्थना इस दिन के संकल्पित प्रयत्नों की परंपरा से साकार होना संभव होती है।

मकर संक्रांति यानी प्रकाश की अंधकार पर विजय

कर्मयोगी सूर्य अपक्षणिक प्रमाद को झटककर अंधकार पर आक्रमण करने का इस दिन दृढ़ संकल्प करता है। इसी दिन से अंधकार धीरे-धीरे घटता जाता है। अच्छे काम करने के लिए शुभ दिनों का प्रारंभ होता है। धार्मिक हिन्दू कामना करते हैं कि मकर संक्रांति के बाद ही उनकी मृत्यु हो। यमराज (मृत्यु) को उत्तरायण का प्रारंभ होने तक रोकने वाले इच्छामरणी भीष्म पितामह इस बात का ज्वलंत उदाहरण है। अग्नि, ज्योति और प्रकाश से युक्त गति अर्थात शुक्ल गति तथा कुहरा और अंधकार से युक्त गति अर्थात कृष्ण गति, इस दृष्टि से देखें तो उत्तरायण में मृत्यु की आकांक्षा यानी तेजस्वी और प्रकाशमय मृत्यु की आकांक्षा है। कुहरे जैसा काला और अंधकार जैसा डरावना जीवन मानव को निकृष्ट मृत्यु की ओर खींचकर ले जाता है।

मानव का जीवन भी प्रकाश और अंधकार से घिरा हुआ है। उसके जीवन का वस्त्र काले और सफेद तंतुओं से बुना हुआ है। मकर संक्रांति के दिन मानव को भी संक्रमण करने का शुभ संकल्प करना है। मानव जीवन में व्याप्त अज्ञान, संदेह, अंधश्रद्धा, जड़ता, कुसंस्कार आदि अंधकार के द्योतक हैं। मानव के अज्ञान को ज्ञान से, झूठे संदेह को विज्ञान से, अंधश्रद्धा को सम्यक से, जड़ता को चेतना से और कुसंस्कारों को संस्कार सर्जन द्वारा दूर हटाना है। यही उसके जीवन की सच्ची संक्रांति कहलाएगी।

संक्रांति यानी सम्यक क्रांति

क्रांति में केवल परिस्थिति परिवर्तन की आकांक्षा होती है जबकि संक्रांति में सम्यक परिस्थिति स्थापना करने की अभिलाषा होती है। इसके लिए केवल संदर्भ ही नहीं अपितु मानव मन के संकल्पों को भी बदलना होगा। यह कार्य विचार क्रांति से ही संभव है। क्रांति में हिंसा का महत्व होता है, परंतु संक्रांति में समझदारी का प्राधान्य होता है। अहिंसा का विधायक अर्थ प्रेम करना है जो संक्रांति में तो क्षण-क्षण में तथा कण-कण में प्रवाहित होता हुआ दिखाई देता है। संक्रांति का अर्थ मस्तक काटना नहीं अपितु मस्तक में स्थित विचारों को बदलना है और यही सच्ची विजय है।

संक्रांति यानी संगक्रांति

इस दिन से मानव को संगमुक्त होने का संकल्प करना चाहिए। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि विकारों के परिणामों से अधिक से अधिक मुक्त रहने का प्रयत्न करना चाहिए। संगमुक्ति से शनैः शनैः हमे मुक्तसंग बनना चाहिए। अर्थात मुक्त जीवन लोगों का संग करना चाहिए। ऐसे जीवनमुक्त लोग ही हमारी क्रांति को योग्य राह, दिशा तथा मार्गदर्शन दे सकते हैं।

किसी भी महान कार्य में संगठन की आवश्यकता होती है। संघे शक्ति कलौ युग संघ में विशिष्ट शक्ति निर्माण होती है। इस विशाल विश्व में कोई भी काम करने के लिए अकेला मनुष्य अपूर्ण है। उसकी शक्ति की मर्यादा होती है। संघ में विशिष्ट प्रकार की शक्तियाँ विपुल मात्रा में इकट्ठी होती है और वे किसी भी कार्य को सहज-सरल बना देती है। परंतु यह बात नहीं भूलना चाहिए कि इस संघ निष्ठा की नींव में अटूट ज्वलंत प्रभु निष्ठा होनी चाहिए।

इस उत्सव के निमित्त स्नेहीजनों के पास जाना होता है, उनको तिल का लड्डू देकर पुराने मतभेदों को नष्ट करना होता है। झगड़े-फसादों को दूर हटाकर स्नेह की पुनः प्रतिष्ठा करनी होती है। महाराष्ट्र में तो यह उत्सव अति प्रचलित है। लोग एक दूसरे को तिल-गुड़ देते हैं और देते समय कहते हैं तिळ गूळ ध्यान आणि गोड-गोड बोला' अर्थात तिल गुड़ लो और मीठा-मीठा बोलो। हमारे यहाँ आज भी ब्राह्मण के घर जाकर लड्डू देने की प्रथा है। इसके पीछे एक अनोखा भाव निहित है। हमारे और ब्राह्मण के संबंध स्नेह हीन न बनें, ये संबंध टूट न जाए इसलिए ब्राह्मण के यहाँ जाकर तिल के लड्डू द्वारा अपने मन की स्निग्धता और हमारे हृदय की मिठास देना, पुराना स्नेह फिर से पुनर्जीवित करना और हमारे कल्याण के लिए हमारे जीवन में उसका स्थान बनाए रखना, यह वह भाव है।

तिल के लड्डू में सुवर्ण रखकर देने की प्रथा थी, जो गुप्तदान की महिमा समझाती है। सांस्कृतिक कार्य करने वाले तेजस्वी ब्राह्मण का जीवन यापन समाज को गुप्त रीति से चलाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण बात इस प्रथा में निहित है। तिल के लड्डू में जो घी होता है वह पुष्टिदायक है। सांस्कृतिक कार्य का क्रांतिवीर पुष्ट मन-बुद्धि का होना चाहिए। प्रभु कार्य का व्रत असिधारा व्रत के समान कठिन व्रत है। उसमें दुर्बल, शिथिल मन तथा अस्थिर बुद्धि के लोगों का काम नहीं है। आज हम तिल के लड्डू के पीछे अ निहित इस भाव को भूलकर केवल छिलके की पूजा करते हैं। इस उत्सव में तिल के लड्डू को जो महत्व प्राप्त हुआ है इसका एक नैसर्गिक कारण भी है। प्रकृति ऋतु के अनुसार फल और वनस्पति देती है। जिस ऋतु में जिस प्रकार के रोग होने की संभावना होती है उस ऋतु में उसके अनुसार औषधि, वनस्पति, फल आदि का निर्माण प्रकृति करती है। जाड़े के मौसम में सख्त ठंड में शरीर के सभी अंग सिकुड़ जाते हैं, रक्त का अभिसरण मंद होने की संभावना होती है, रक्तवाहिनियाँ शीत के प्रभाव में आ जाती है, परिणामस्वरूप शरीर रुग्ण बनता है। ऐसे समय शरीर को स्निग्धता की आवश्यकता होती है और दिल में यह स्निता का गुण है।

आयुर्वेद की दृष्टि से तिल इस ऋतु में आदर्श पौष्टिक खुराक की आवश्यकता को पूर्ण करता है। खेत में से ताज तिल की फसल घर आई हो, तब रूग्ण बने इस शरीर के लिए इससे अधिक योग्य औषधि दूसरी कौन-सी हो सकती है? इस दिन पतंग उड़ाने की प्रथा का भी प्रारंभ हुआ जिसके पीछे विशिष्ट अर्थ निहित है। सामान्यत पतंग उड़ाने के लिए खुले मैदान या किसी घर की छत पर जाना पड़ता है और शीत के दिनों में इस प्रकार सहज रूप से सूर्य स्नान होता है। तात्विक दृष्टि से देखें तो हमारे जीवन की पतंग भी इस विश्व के पीछे स्थित अदृश्य शक्ति किसी अज्ञात छत पर खड़ी होकर उड़ाती है। संक्रांति के दिन जिस प्रकार प्रकाश में लाल, पीले, नीले रंग की पतंग उड़ती हुई दिखाई देती है, उसी प्रकार इस विश्व के विशाल

आकाश में सत्ताधीश, धनवान, विद्वान आदि अनेक प्रकार की पतंग उड़ती है। पतंग की हस्ती और मस्ती तब तक बनी रहती है जब तक उसकी डोर उसके सूत्रधार के हाथ में होती है। सूत्रधार के हाथ से छूटी हुई पतंग वृक्ष की डाली पर बिजली के तार या किसी पैखाने की टंकी पर फटी हुई और विकृत दशा में पड़ी हुई देखने को मिलती है। भगवान के हाथ से छूटी हुई मानव पतंग भी अल्प ही दिनों में रंग उड़ी, फीकी व अस्वस्थ दिखाई देती है।

संक्षेप में इस पर्व के निमित्त सूर्य का प्रकाश, तिल-गुड़ की स्निग्धता व मिठास और पतंग का उसके सूत्रधार के प्रति विश्वास हमारे जीवन में साकार हो तभी हमारे जीवन में योग्य संक्रमण हुआ है ऐसा माना जाएगा।

मकर संक्रांतिः उत्तरायण पर्व

जी हाँ, गुजरात में मकर संक्रांति का पर्व महिलाओं के लिए भी मौज मस्ती का दिन होता है। हालाँकि अन्य प्रदेशों में इस दिन गली-गली गिल्ली-डंडा खेला जाता है, मगर गुजरात में घर-घर लोग पतंगबाजी का मजा लेते हैं। इस दिन पूरा परिवार घर की छत पर जमा हो जाता है। यदि आसमान से नीचे देखा जा सके तो पता चलता है कि सिर्फ पुरुष वर्ग ही नहीं महिलाएँ भी पतंग उड़ा रही है। गुजरात में महिलाओं को पतंग उड़ाना बचपन से सीख में मिलता है। तिल्ली के लड मूँगफली की पट्टी बनाने के साथ ये पतंगबाजी में भी निपुण होती है। मकर संक्रांति (गुजरात में इसे उत्तरायण' पर्व कहा जाता है)

पुरुष प्रधान देश होने के कारण हमारे त्यौहार तक पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है। दीपावली जैसे बड़े पर्व पर साफ-सफाई में महिलाओं की भूमिका जितनी अहम होती है, क्या पटाखे फोड़ने में उन्हें उतनी स्वतंत्रता मिलती है? मगर कहीं-कहीं परंपरागत रूप से आज भी कुछ त्यौहारों में महिलाओं का शामिल होना, ऊधम करना, मौज मस्ती करना पुरुषों की तरह वाजिब है। यहाँ बात हो रही है मकर संक्रांति पर्व की।

जी हाँ, गुजरात में मकर संक्रांति का पर्व महिलाओं के लिए भी मौज मस्ती का दिन होता है। हालाँकि अन्य प्रदेशों में इस दिन गली-गली गिल्ली-डंडा खेला जाता है, मगर गुजरात में घर-घर लोग पतंगबाजी का मजा लेते हैं। इस दिन पूरा परिवार घर की छत पर जमा हो जाता है। यदि आसमान से नीचे देखा जा सके तो पता चलता है कि सिर्फ पुरुष वर्ग ही नहीं महिलाएँ भी पतंग उड़ा रही है। गुजरात में महिलाओं को पतंग उड़ाना बचपन से सीख में मिलता है। तिल्ली के लड् मूँगफली की पट्टी बनाने के साथ ये पतंगबाजी में भी निपुण होती है। मकर संक्रांति (गुजरात में इसे उत्तरायण' पर्व कहा जाता है) के आते ही पूरा परिवार पतंग और डोर लिए घर की छत पर जा पहुंचता है और जब वापस नीचे उतरता है तो रात हो चुकी होती है। हालाँकि रात में भी कैडल पतंग संक्रांति की रात का संदेश देती तारों के बीच झिलमिलाती है। गुजरात की हर सोसायटी (कॉलोनी) घर को छत पर भरी नजर आती है। इसमें अपने पिता, भाई या पति, ससुर, देवर जेठ के संग पतंग उड़ाती घर की महिला में भी वही उत्साह देखने को मिलता है, जो कि पुरुषों में पूरे उल्लास के साथ आसमाँ पर छेड़खानी देर तक की है। आमतौर पर अपनी सखी सहेलियों के साथ मौज हँसी-ठिठोली करने वाली हर लड़की इस दिन अपनी पतंग से किसी दूसरी पतंग की छेड़खानी करती है। फिर किसी एक सोसायटी की पतंग दूसरी सोसायटी की जयाबेन काट देती है और खुशी के मारे उछल पड़ती है काटयो छे और विजेता सी चमक चेहरे पर आ जाती है। हमारे समाज में महिलाओं की ऐसी स्वतंत्रता के अनेक पर्व है। मगर बावजूद इसके समय बदलने के साथ पतंगबाजी के इस पर्व में परिवर्तन नहीं आया। इसके प्रति अरुचि नहीं आई। गुजरात का हर घर संक्रांति के पहले से ही डोर और पतंग से भरने लगता है। हाँ, खरीददारी जरूर भैया या पप्पा करते हैं मगर जब उड़ाने की बारी आती है तो घर की महिलाओं के मॅजे अलग होते हैं,

इस दिन बच्चों में विशेष उत्साह रहता है। सारा दिन बच्चे इसकी तैयारी में जुटे रहते हैं। देर रात को खुली जगह पर आग लगाई जाती है। परिवार के सभी सदस्य अग्नि के चारों ओर परिक्रमा (चक्कर लगाना) लगाते हैं।

उन्हें माँगकर 'कुछ देर' पतंग नहीं उड़ानी पड़ती।

यही तो है भारतीय पर्व का स्वरूप खास बात यह कि इस पूरे पतंगबाजी के दौर में कहीं कोई छींटाकशी नहीं होती है। किसी लड़के की पतंग किसी लड़की ने काटी हो या इसके उलट, एक शोर वातावरण में होता है और विजयी पक्ष थोड़ा उल्लासित हो जाता है तो दूसरा पक्ष मुस्कराकर अपनी बची डोर समेटने लग जाता है। उत्तरायण के दिन पूरा परिवार छत पर एकत्र होकर एक संदेश और दे जाता है। वह यह कि आनंद के पल साथ-साथ बिताएँ। कुछ समय के लिए ही सही सोसायटी के दूसरे लोगों के साथ थोड़ी गपशप हो जाए, थोड़ी चिल्लाचोट हो। आखिर मौज-मजा का दौर फिर पूरे साल थोड़े ही मिलता है।

पोंगल

तमिलनाडु में मकर संक्रांति को 'पोंगल' के रूप में मनाया जाता है। सौर पंचांग के अनुसार यह पर्व महीने की पहली तारीख को आता है। पोंगल विशेष रूप से किसानों का पर्व है। पोंगल सामान्यतः तीन दिन तक मनाया जाता है। पहले दिन कूड़ा-करकट एकत्र कर जलाया जाता है, दूसरे दिन लक्ष्मी की पूजा होती है और तीसरे दिन पशु धन की।

पोंगल के दिन स्नान करके खुले आँगन में मिट्टी के नए बर्तन में खीर बनाई जाती है। जिसे पोंगल कहते हैं। इसके बाद सूर्य भगवान को नैवेद्य चढ़ाया जाता है। तब खीरे को प्रसाद के रूप में सब लोग ग्रहण करते हैं। इस दिन बेटी और दामाद का घर पर स्वागत किया जाता है। तीसरे दिन किसान अपने पशुओं को खूब अच्छी तरह सजाकर जुलूस निकालते हैं। कन्याओं के लिए यह हर्षोल्लास का पर्व है।

लोहड़ी

लोहड़ी सिख परिवारों के लिए बहुत महत्वपूर्ण त्यौहार है। लोहड़ी मकर संक्रांति के एक दिन पहले मनाया जाता है। हर साल 13 जनवरी को पंजाबी परिवारों में विशेष उत्साह होता है। यह उत्साह तब और बढ़ जाता है जब घर में बहू या फिर बच्चे के जन्म की पहली लोहड़ी हो।

इस दिन बच्चों में विशेष उत्साह रहता है। सारा दिन बच्चे इसकी तैयारी में जुटे रहते हैं। देर रात को खुली जगह पर आग लगाई जाती है। परिवार के सभी सदस्य अग्नि के चारों ओर परिक्रमा (चक्कर लगाना) लगाते हैं। इसके बाद सबको प्रसाद बाँटा जाता है। प्रसाद में मुख्य रूप से तिल, गजक, गुड़, मूँगफली और मक्के की धानी (पॉपकार्न) बाँटी जाती है।

आग जलाने के बाद उसके आसपास चावल, रेवड़ी और चिरोंजी बिखेरी जाती है, जिसे वहाँ मौजूद लोग उठाते हैं। ऐसा माना जाता है कि जो व्यक्ति आग के बीच में से धानी या मूँगफली उठाता है उसकी मुराद पूरी होती है। इसके बाद नाचने गाने का सिलसिला शुरू होता है।

सारी महिलाएँ मिलकर पारंपरिक गीत गाती है। डांस करती हैं। रात के खाने में विशेष रूप से मक्के की रोटी, सरसों का साग बनाया जाता है। इस तरह पूरा परिवार हँसते-गाते लोहड़ी मनाता है और दुआ माँगता है कि उनका पूरा साल इसी तरह गुजरे।

हल्दी-महत्वपूर्ण औषधि

- दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ

प्राचीन काल से ही हल्दी को भारत में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, विवाह तक में 'हल्दी' एक अलग रिवाज ही है। हल्दी एक भारतीय वनस्पति है,इसका पौधा छ: फुट तक बढ़ता है,जिसकी जड़ों की गांठों के रुप में हल्दी मिलती हैं। आयुर्वेद में हल्दी को एक चमत्कारिक औषधि के रुप में मान्यता मिली है, औषधि ग्रंथों में इसे हरिद्रा,कुरकुमा लौड़ा,हरदल,वरवर्णिनी, योशितप्रिया भी कहा गया है।अंग्रेजी में हल्दी को टर्मरिक कहा जाता है, वनस्पति विज्ञान के अनुसार हल्दी की चार प्रजाति होती है...

1. करकुमा लौगा– मसाला हल्दी– अंदर से लाल या पीली
2. करकुमा एरोमेटिका–जंगल हल्दी।
3. करकुमा अमांडा – आमा हल्दी के पत्तों में महक।
4. करकुमा केरीया– काली हल्दी।

भारत में हल्दी को विशेष शुभ फलदाई मानकर पूजा–पाठ, विवाहिद संस्कार, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष व तंत्र विद्या में उपयोग किया जाता है। हल्दी से गुरु ग्रह की कृपा मिलने से इसे सुख–सौभाग्य का प्रतीक भी मानते हैं, हमारे जीवन में हल्दी पैदा

होने से लेकर मरने तक साथ निभाती है। घर में रसोई में हर रेसिपी में स्वाद व रंग बढ़ाने के लिए हल्दी का प्रयोग किया जाता है।

आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ रजनीश खन्ना ने बताया कि आयुर्वेद में हल्दी को अमृत समान महत्वपूर्ण माना जाता है, हल्दी का प्रयोग पाचन तंत्र की समस्या,रक्त संचार की समस्या, जीवाणुओ के संक्रमण, मूत्र रोग,त्वचा रोग, गठिया जैसी कई शारीरिक व्याधियों में बहुत लाभकारी माना जाता है। उपचार में काली हल्दी को पीली हल्दी से बेहतर माना जाता है, जबकि आमा हल्दी चोट व दर्द में लाभकारी मानते हैं। हल्दी को सौंदर्यवर्धक भी माना जाता हैं, स्नान उबटन सहित सौंदर्य क्रीमों में भी हल्दी का उपयोग किया जाता हैं।

Journal of Medicinal chemistry में प्रकाशित एक लेख The Essential Medicinal Chemistry of Curcumin के अनुसार हल्दी में एंटीऑक्सीडेंट, एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटीमाइक्रोबियल, एंटीसेप्टिक, हेपेटोप्रोटेक्टिव जैसे कई गुण पाए जाते हैं।

सामान्य रुप से दस ग्राम हल्दी की तीस खुराक बनाकर रोज एक खुराक गुनगुने दूध के साथ हर बालिग को इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए लेना चाहिए।पित्त दोष या गर्मी हो तो चिकित्सकीय परामर्श के बाद ही हल्दी का सेवन करें। हल्दी का सेवन कई रोगो में किया जाता हैं, दृष्टांत स्वरुप कुछ का उल्लेख किया गया है--

* जुकाम-रात को सोने से पूर्व हल्दी का धुआं सूंघने से लाभ मिलता है, इसके बाद एक घंटे तक पानी नहीं पीना चाहिए, गुनगुने दूध के साथ हल्दी का सेवन करें।
* खांसी- एक दो ग्राम हल्दी को भूनकर चूर्ण बना शहद या देशी घी के साथ दिन में तीन बार लें।
* पेट दर्द-दस ग्राम हल्दी को 250मिली पानी में उबालकर गुड़ के साथ ले।
* आंखों-मे संक्रमण होने पर एक ग्राम हल्दी को 25 मिली पानी में उबालकर छानने के बाद दिन में तीन बार डालने से आराम मिलेगा।
* कान-बहने में भी हल्दी को पानी में उबालकर छानने के बाद डालने से आराम मिलेगा।
* फोड़े-फुंसियां -होने पर दर्द,जलन होने पर हल्दी के साथ त्रिफला,नीम,चंदन को पीसकर लेप करने से आराम मिलेगा।
* पायरिया-मसूड़ों-दांतो में पायरिया, बदबू आने, दर्द होने पर हल्दी, सेंधा नमक,लोंग चूर्ण को सरसों तेल में मिलाकर मंजन की तरह मालिश करने के पांच मिनट बाद गुनगुने पानी से कुल्ला करने से आराम मिलेगा।
* त्वचा रोग-दाद खाज या खुजली हो तो हल्दी को नीम पत्ती के साथ लेप बनाकर लगाएं। हल्दी को मक्खन के साथ मिलाकर भी लगा सकते हैं। हल्दी गुड़ को लेकर गौ मूत्र के साथ पीने से कुष्ठरोग में भी आराम मिलता है।
* ल्यूकोरिया-में हल्दी व गुग्गुल बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण को शहद के साथ सुबह शाम लेने से आराम मिलेगा। इसके अलावा दो ग्राम हल्दी को दूध में उबालकर गुड़ के साथ लेने से भी आराम मिलेगा।
* पीलिया-मे हल्दी,लौह भस्म, हरड़ को बराबर मात्रा में मिलाकर सुबह-शाम शहद या देशी घी में लेने से आराम मिलेगा। इसके अलावा हल्दी को मठ्ठे में मिलाकर पीने से लाभ होगा।

हल्दी रक्त चाप व डायबिटीज में भी चिकित्सकीय परामर्श से लेने पर लाभकारी रहती हैं।

वास्तव में हल्दी हमें हेल्दी बनाती हैं। परंतु आयुर्वेदिक चिकित्सा में वात-कफ-पित्त सिंदात के अनुसार ही पदार्थ या औषधि की मात्रा, खुराक, अंतराल या समय सीमा तय की जाती है, हल्दी भी कोई अपवाद नहीं है। आयुर्वेद के चंद्रोदय ग्रंथ के अनुसार हल्दी की तासीर गर्म होने से सर्दियों में ही हल्दी का सेवन उचित रहता है। हल्दी के अत्याधिक मात्रा या गलत विधि से सेवन करने से शरीर को हानि भी हो सकती हैं, अतएव हल्दी का औषधि के रूप में सेवन चिकित्सकीय परामर्श के बाद ही करना चाहिए।

अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन के अनुसार किसी भी वीमारी के उपचार के लिए हल्दी या उसके घटक का औषधि के रूप में सेवन करने के लिए कोई उच्च गुणवत्ता वाला वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। इसके बावजूद कोरोना के बाद तो अमेरिका, यूरोप सहित विश्व में आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा में विश्वास बढ़ने के साथ हल्दी का औषधिय सेवन बढ़ता जा रहा है।

-0-

चाय

- श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

चाय शब्द दिल में आते ही तनबदन में स्फूर्ती का संचार हो जाता है। स्फूर्ती का संचार होते ही मन में उमंग और तरंग नाच उठती है। मन अनायास सुस्ती को भगाते हुए झूम उठता है और हमारे मन में अनायास विचार आ ही जाता है।

सुनो एक राय है
प्यार से बढ़ कर चाय है।

और हम अपनी दैनिक दिनचर्या के ताने बाने सुलझा कर अपने कार्यो को पूर्ण करने में लग जाते है। यहाँ से ही हमारी नई सुबह और नई दिनचर्या का आरंभ हो जाता है। मेरे कहने का तात्पर्य है कि चाय हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। इसने हमारे जीवन में एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। सुबह उठ कर हम भगवान का नाम ले कर पहली चीज जो याद करते हैं वह है चाय। आप सुबह अपने घर में भी बड़ों की आवाज सुनते होंगे हाँ भाई चाय में क्या देरदार है। चाय मिले तो कामधाम करनें में मन लगे। चाय के बगैर जीवन भी दूभर लगता है। दैनिक कार्यो के निर्वाहन के पहले चाय, दैनिक कार्यों के निर्वाहन के बाद सुकून की चाय अपने परिवार जनों के साथ, प्रातः कालीन बैठक पर चाय, गो-धूलि बेला के सांध्य कालीन नाश्ते के साथ चाय और ना जाने ऐसे कितने ही मौके आते हैं जब हमें याद आती है चाय। चाय होती तो हम ये करते, चाय होती तो वो करते यानि यत्र-तत्र सर्वत्र चाय का ही बोलबाला दिखायी पड़ता है।

चाय की हमारे जीवन पर अमिट छाप पड़ती दिखायी पड़ती हैं। अपने घर अतिथि आने से हम उनसे पूछते है आप चाय, काफी या ठंडा क्या लेंगे। आग्रह के पेय पदार्थो में पहला नाम चाय का ही आता है। बाकी नाम तो दूसरे स्थान पर टिक कर रह जाते है। एक और परिदृष्ट हैं क़- व्यवसायिक जीवन में चाय के शौकीन लोग एक दूसरे से जल्दी घुल-मिल जाते हैं, इनमें आपसी व्यवसायिक संबंध बनते हैं और ये संबंध निभते चले जाते हैं।

किसी ने खूब कहा है-
बैठ जाता हूँ उधर,
चाय खौल रही हो जिधर।

हमारे मित्र, परिजन, सहपाठी और रिश्तेदार आदि कई ऐसे लोग है। अपनी व्यस्तताओं के बाबजूद भी एक दूसरे को फोन करते हैं। आओ न यार चाय पर मिलते है। और मिलने पर आरंभ हो जाती है कुछ आपबीती, कुछ खुशियाँ कुछ गमों भरे लम्हों के किस्से की बयाँबाजी। सारे दर्द दोस्त चाय की प्याली के साथ अपने हालात बाँट कर मन हल्का कर लेते है।

''बैठे चाय की प्याली लेकर पुराने
किस्से गर्म करने,
चाय ठंडी होती गयी और,
आँखें नम होती गई।''

कई बार किसी प्रियजन को याद कर हम अनायास ही कह उठते हैं -

''हाथों में चाय और यादों में आप हों,
फिर उस सुबह की क्या बात हो''।

आज चाय का प्रचलन पूरी दुनिया में है। भारत देष में चाय का प्रचलन ब्रिटिश शासन के दौरान हुआ था। कहते है कुछ ब्रिटिश लोगों का ध्यान असम में लगी हुयी चाय की झाड़ियों पर गया, तब उन्होंने चाय पर रिसर्च करना आरंभ किया। उस समय असम के रहवासी चाय की झाड़ियों से पत्ती को उबाल कर पिया करते थे। अंग्रेजों के द्वारा चाय पर रिसर्च किया गया और 1834 में भारत में अंग्रेजों ने चाय की परम्परा को शुरू किया। इसके बाद चाय पूरी दुनिया में सभी लोग पीने लगे थे। कहते हैं चाय पीनें के बाद शरीर फुर्तीला और ऊर्जावान हो

जाता है। भारत में चाय का इतिहास कोई दो सौ वर्ष पुराना है। मगर चीन में इसका उपयोग सदियों से होता रहा है। भारत में चाय लाने का श्रेय ईस्ट इंडिया कंपनी को जाता है। आज यह हमारी सभ्यता का अहम् हिस्सा बन चुकी है। 70 प्रतिषत भारतीय दिन में दो से अधिक बार चाय पीते है। घर में अतिथि आने से उन्हें चाय पिलाना रिवाज बन चुका है।

भारत चाय का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। चाय का जन्म चीन में हुआ था और आज तक चीन में सर्वाधिक मात्रा में चाय का उत्पादन होता है। वहीं निर्यात के मामले में श्रीलंका पहले स्थान पर है, जिसका लगभग सम्पूर्ण विदेशी व्यापार चाय पर निर्भर करता है। भारत में चाय के संबंध में हैरान कर देने वाला तथ्य यह है कि दो सौ वर्ष पूर्व यहाँ कोई व्यक्ति चाय से परिचित नहीं था, मगर एक योजना के तहत सड़कों पर चाय के ड्रम रखे गए राहगीरों को मुफ्त मं चाय पिलायी गई और इसका नतीजा यह हुआ कि आज कम से कम एक अरब से जयादा लोग दिन की शुरूआत चाय की प्याली से करते है।

चाय की पहचान और इसके अविष्कार से जुड़ी रोचक कहानी चीन के एक शासक 'शेन' की है, वह सदैव उबला पानी पिया करता था। उनका रसोइया ''ली'' उनके लिए पानी तैयार किया करता था। एक दिन उबालते समय पास की झाड़यिों से कुछ पत्तियाँ उबलते पानी में आ गिरी। और उबलते पानी में वे भी उबल गयी और पानी का रंग बदल गया। जब इस पानी को शेन ने पिया तो उसने ली को बुला कर उसे पुरस्कृत किया यह उबली पत्तियों का पानी शेन को बहुत स्वादिष्ट और लुभावना लगा। और प्रायः वे यही जल पीने लगे। ये पत्तियाँ चाय की थीं और इसे सर्वप्रथम पीने वाले शासक शेन थे। अब आलम यह था कि यत्र-तत्र सर्वत्र चाय की चर्चा चल निकली थी। चाय की विकास यात्रा चीन से होकर ब्रिटेन पहुँची। और वहाँ से सभी देशों में चाय को औद्योगिक आधार बना कर ब्रिटिश कंपनियों ने अपने उपनिवेशों का विस्तार किया तथा वहाँ की उपजाऊ जमीनों पर चाय की खेती करवानी शुरू कर दी।

इसी प्रकार चीन के एक राजदूत ने भेंट स्वरूप रानी ऐलीजाबेथ को उपहार स्वरूप चाय की पत्तियाँ भेजी। रानी को यह भेंट बहुत पसंद आयी और उसने इंगलैण्ड जापान आदि में इसे प्रसारित करवाया उस समय चाय की कीमत 100 रू प्रति पौंड थी। चाय का चलन शुरू ही हुआ था कि ईस्ट इंडिया कंपनी ने चाय का व्यापार आरंभ कर दिया। यह कंपनी चीन से चाय खरीद कर अधिक दामों में बेचने लगी। सन् 1834 में चीनी सरकार ने चाय की बिक्री पर रोक लगा दी। इसके बाद इंगलैंड व औपनिवेशिक देशों में चाय के बागान बनाए गए। ईस्ट इंडिया कंपनी ही भारत में चाय लेकर आई असम व कुमाऊँ में इसकी खेती की जाने लगी। दार्जलिंग जैसे पहाड़ी खेत्रों में भी चाय की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

आज का आलम यह है -

''तंदरूस्ती की रक्षा करती है गरम चाय,
गरम चाय है जहाँ, तंदरूस्ती है वहाँ''।

आज के समय में कई स्थानों पर चाय इलाज का काम भी करती है। कफ, सर्दी खाँसी है तो अदरक लौंग और मसाले की चाय पिलाते हैं। सिरदर्द और थकान की रामबाण औषधि मसालेदार चाय मानी जाती है।

चाय के पौधे की मुख्यतः चार किस्में पायी जाती है। उपयुक्त जलवायु में इन्हें उगाया जाता है। 10 से 30 फीट तक ऊँचे इनके झाड़ होते हैं। जिन पर दो से दस इंच लम्बी पत्तियाँ लगती है। इनका उपयोग चाय बनाने के लिए किया जाता है।

चाय के बागानों में अधिकतर स्त्रीयाँ ही काम करती हैं। ये अपनी पीठ पर बड़े बड़े टोकरे बाँधे चाय की पत्तियाँ तोड़ कर उसमें डालती जाती हैं। जिनके परिष्करण के बाद पैकिंग के रूप में यह हमें बाजारों में उपलब्ध होती है।

1. ग्रीन टी - इन दिनों ग्रीन टी का बहुत चलन हो गया है। इस चाय को बनाने का तरीका काली चाय से अलग होते है। इसे पीना शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होता है। इसमें स्वाद के लिए नीबूं, पुदीना का रस और शहद मिला कर पीते हैं। ग्रीन टी में लोग अक्सर चीनी नहीं मिलाते हैं। यह चाय-प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाती है। अलजाइमर को रोकती है। इसके अनेक फायदे हैं।

2. ब्लैक टी - कुछ लोग चाय में दूध डालना पसंद नहीं करते हैं। वे केवल पत्ती उबाल कर, छान कर, चीनी बिना मिलाए या मिला कर पीते हैं। यह चाय

अ. नाश्ते के लिए बढ़िया।
ब. उच्च कैफीन सामग्री।
स. शक्ति सतर्कता को बढ़ावा देती है।
द. नकारात्मकता दूर करे।

3. हर्बल-टी - हर्बल टी बनाने के लिए हर्ब्स यानि सिर्फ जड़ी बूटियों का प्रयोग किया जाता है। इसका नाम टी भले की हो पर यह चाय नहीं होती है। चाय पत्तियाँ इसमें नहीं मिले होने के कारण इसमें कैफीन भी नहीं होता है।

अ. कैफीन के बिना तंत्रिका तंत्र को उत्तेजित करता है।
ब. सुस्ती और नींद को बढ़ावा देता है।
स. वनज घटाने में मदद करता है।
द. तनाव को रोकता है।

4. दूध की चाय - यह चाय बनाने का सबसे पुराना और

सरल तरीका है। इसमें सही मात्रा में दूध पत्ती पानी चीनी मिला उबाल कर पिया जाता है। यह सुस्ती, सर्दी – जुखाम, नींद को दूर भगाती है।

5. लेमन-टी – आज के समय में लेमन टी भी बहुत चलन में है। इसे तैयार करने में चाय की पत्ती को 2-3 मिनट पानी में उबालते हैं। फिर छान कर नींबू रस, चीनी या शहद, पुदीना-सोंठ का पाउडर, काला नमक में से जो पसंद हो उसे डाल कर पीते हैं।

फायदे-कैंसर से बचाव लेमन टी में पोलीफिनोल और विटामिन सी अधिक मात्रा में पाया जाता है।

ब. विषाक्त पदार्थ नीबूं से शरीर से बाहर निकलते हैं।

यह चाय प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है।

मूड अच्छा रहता है।

6. जिंजर टी – दूध की चाय बनने पर इसमें अदरक कूट कर डाली जाती है और उबालकर पी जाती है। इससे चाय में अदरक का स्वाद आता है और इससे होने वाले फायदे भी मिलते हैं।

अ. ब्लड सर्कुलेशन बढ़ाती है।

ब. दर्द में राहत दिलाती है।

स. माहवारी के दौरान होने वाली परेशानियों से राहत दिलाती है।

द. रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में असरदार।

ड़ सांस संबंधी बीमारियों में असर कारक।

झ. कोलेस्ट्रॉल लेवल को कम करने में सहायक।

7. व्हाइट टी– यह चाय सबसे कम तैयारी में बनती है। शानदार स्वाद और खुशबू के लिए यह प्रसिद्ध है। यह एंटीबैक्टिरियल गुणों से भरपूर होती है और ब्लडप्रेशर कंट्रोल करने में सहायक होती है। कैफीन कम करने के लिए यह अच्छा विकल्प है।

इसके फायदे भी बहुत हैं –

अ. उच्च एंटी ऑक्सीडेंट का स्तर,

ब. कम कैफीन सामग्री

स. यकृत को उत्तेजित करता है।

इसके अलावा भी कई प्रकार की चाय प्रचलन में है, परन्तु मुख्यतः हमारे देश में इन्हीं का प्रचलन ज्यादा है, परन्तु मुख्यतः हमारे देश में इन्हीं का प्रचलन ज्यादा है। किसी भी जड़ी बूटी का चाय में प्रयोग करने के पहले उसके संबंध में जान लें जिससे आपको हानि ना पहुँचे।

''एक कप चाय, दो दिलों के मिला देती है।
एक कप चाय दिन भर की थकान मिटा देती है।''

सुबह सुबह चाय की तलब अधिकांश लोगों में देखी गई है। लेकिन खाली पेट पीने वाली चाय हानिकारक होती है। खाली पेट चाय पीने से एसिडिटी की समस्या हो सकती है, इसलिए चाय पीने से पहले कुछ हलका जैसे बिस्किट आदि खा लेना चाहिए।

चाय पाचन तंत्र को कमजोर कर सकती है। चाय में कैफीन मौजूद रहता है, जो ब्लडप्रेशर को बढ़ाता है। ज्यादा चाय पीने से दिल की बिमारी होने का खतरा रहता है। चाय सदैव ताजी बना कर पीनी चाहिए। रखी और गर्म करके पीने वाली सदा नुकसान करती है। चाय ज्यादा पीने से अनेक नुक्सान हैं। इसलिए इसे सीमित रूप में पीना ही उचित रहता है। हर बात या सिक्के के दो पहलू होते हैं अच्छा/बुरा इसी तरह चाय के भी दो पहलू हैं लाभ/हानि।

आप में से बहुतों ने कुल्हड़ में चाय पी होगी। कुल्हड़ में चाय पीते समय एक सौंधी खुशबू इसके स्वाद को दुगना कर देती है। और इस मिट्टी के बर्तन स्वाद को दुगना कर देती है। और इस मिट्टी के बर्तन कुल्हड़/अखोरा में चाय पीना ज्यादा हानिकारक नहीं होता है। जबकि टपरी और फुटपाथ पर मिलने वाली चाय हमें डिस्पोजल या कांच के गिलास में पीने को दी जाती है। इन चीजों में चाय पीना हमारे स्वास्थ के लिए हानिकारक है। बाहर चाय पीते समय हमें कुल्हड़ की चाय पीने पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

''सुनो यह हकीकत बहुत पुरानी है,
चाय हम सबके दिलों की राजधानी है''।

दिन भर की थकान के पश्चात कुछ लोग अपने यारों की महफिल में अपना हाले दिल बयाँ चाय के साथ करते हैं। एक गमगीन दुखी दोस्त अचानक कह उठता है –

''चाय की चुस्की के साथ,
कुछ गम भी पीता हूँ।
मिठास कम है जिंदगी में,
फिर भी जिंदादिली से जीता हूँ।''

एक प्रेमिका अपने प्रेमी को बताती है। उसकी मम्मी उसके प्रेमी को बात करने के लिए शाम की चाय पर बुला रही है। वह लोकप्रिय गीत आपक लोगों ने सुना ही होगा-''शायद मेरी शादी का ख्याल.....'' चाय अमीर गरीब सबके लिए है। सभी वर्ग/तबके के लोग चाय को पसंद करते हैं। धनवानों की गाड़ियाँ भी चाय की टपरी पर चाय पीने को रूकती है।

''महँगी गाड़ी में बैठकर भी,
हम सस्ती चाय पिया करते हैं।
अपने ख्वाबों की दुनिया में ,
हम चाय के साथ खुश हो जिया करते हैं। ''

बेजुबान किताबें

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

मैं किताब हूँ। जी हाँ, एक बेजुबान किताब। मेरे कोई अपनी भौतिक जुबान नहीं, लेकिन मैं बहुत कुछ कहती हूँ। आप मुझे पुस्तक, पोथी आदि के नाम से भी जानते हैं। प्रारंभिक शिक्षा मेरे बिना संभव नहीं। मैं एक शिक्षक का काम भी करती हूँ। हजारों साल पुराना इतिहास संजो कर रखा हुआ है। लिखित खजाना प्रदान करती हूँ। अपने सीने में संजो कर रखी हुई पुरानी स्मृतियों को खोलकर आपके सामने रखती हूँ। लेकिन आज मैं मर्मान्तक पीड़ा झेल रही हूँ। जब सहन ना हुआ तो कहने बैठ गए। शायद मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया में रहने वाले मेरी पीड़ा और उपयोगिता ना समझे। मुझे समझने वाले और मेरी उपयोगिता समझने वाले चले गए। रह गए हम लोग अकेले। जब तक वह सुधि जन रहे। हमारे ठाठ बांट रहे। हम उनको जान से प्यारे थे। हमें वह हमेशा सदा सजाकर संवार कर रखते थे। अलमारी बड़ी सजा कर रखी जाती थी। दिन में 10 बार अपने अंगोछा से साफ करते थे। मजाल है कोई मुझे गंदे हाथों से छू लेता। मैं एक हाथ से दूसरे हाथ तक संभाल कर पहुंचाई जाती थी और मुझे ले जाने वाला उतनी ही व्यवस्था से मुझे रखता था। सब दिन होत न एक समान यही हमारे साथ हुआ हमारे चाहने वाले रखने वाले चले गए और हम रह गए अकेले ऐसे हाथों में, जिन्हें हमारी उपयोगिता मालूम ही नहीं थी। हम लोगों को अलमारी से निकालकर संदूक में भरकर ऊपर स्टोर में रख दिया गया। सालों से संदूक में भरी रखी रहें, सांस लेना भी मुश्किल था। और आज तो हद हो गई मुझे कबाड़ी को बेच दिया गया, सफाई के नाम पर। कबाड़ी ने मुझे बोरे में ठूंस दिया। उनके साथ जो सड़ी गली वस्तुएं बदबू दे रही थी। हम घर में फालतू का कचरा थे। जगह घेर रही थी। कुछ बहनों को तो दीमक नाम का कीड़ा चट कर गया। तड़प तड़प कर मरती रही। हमें खुशी थी चलो सांस लेने को तो मिलेगी लेकिन कबाड़ी ने हमें एक ऐसी जगह भेज दिया जा हमारे शरीर के पुर्जे पुर्जे अलग कर दिए गए और पानी में छोड़ दिया, डूबने के लिए। कुछ जो बहुत वृद्ध हो गई थी। उन्हें अग्नि के हवाले कर दिया गया और वह एक मुट्ठी राख में बदल गई। लेकिन मुझे अभी संतोष इस बात का भी है कि हमारे चाहने वाले आज भी मौजूद है। हमारी उपयोगिता उन्हें मालूम है। अपनी बात में दम रखने के लिए सत्यता को शामिल करने के लिए हमारा दम भरा जाता है। हमारी पृष्ठ संख्या बताई जाती है। हम इतने पर भी संतोष किए हुए। हमारा मूल्य समझने वाले हमको नए रूप में नए कलेवर में लेकर आ रहे हैं। हम अपनी उपयोगिता अभी भी सिद्ध कर रहे है, क्यों है ना हम उपयोगी। जो हमें नए कलेवर में लेकर आता है हम उसका मान बढ़ाते हैं। इज्जत में चार चांद लगाते हैं। विद्वान, कवि और साहित्यकार हैं जो हमारा मूल्य समझ रहे हैं।

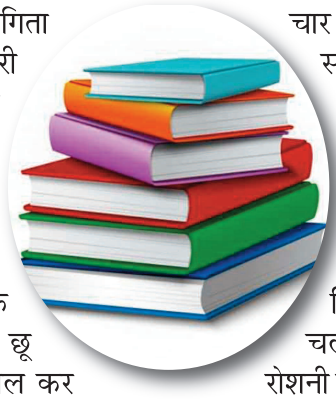

हम सच्चे और ईमानदार दोस्त हैं। अकेले -पन के साथी हैं। अकेलापन दूर करते हैं। उदासी भगाते हैं। नया उत्साह भरते हैं। मनोवल बढ़ाते है। पता नहीं लोग क्यों हमारी उपेक्षा करते हैं। जब नेट नहीं रहेगा, बिजली नहीं रहेगी तब मोबाइल इंटरनेट कैसे चलेगा। मगर हम तो रहेंगे। हमें आप दिए की रोशनी में भी पढ़ सकते हो। जहाँ चाहो वहाँ बैठ कर पढ़ सकते हैं। चाहे तलघर हो या पहाड़ियाँ। एक बात और जान लो गूगल बाबा हमारी बातें ही लेता है। जानकारी हमारी ही सटीक है। इतिहास हम समेटे हैं। आगे भी हम ही समेटे रहेंगे। अरे भाइयों वायरस का जमाना है मोबाइल में वायरस आ गया, तो सब गोल। तब कहाँ से मिलेगी जानकारी, आओगे ना हमारे पास। समय के साथ चलो, दुनिया के साथ चलो, कौन मना करता है, लेकिन हमारी इतनी उपेक्षा भी ठीक नहीं। हम भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर को समेटे हुए है। हमारी यही धरोहर विदेशी ले गए। नए नए अविष्कार कर रहे हैं। अविष्कारों के जनक वह है। मुझे लगता है हम बेजुबानों की जुबान आप लोग समझ गए होंगे और आगे हमें वही मान सम्मान मिलेगा, जो मोबाइल और नेट को देते हो। हम उनसे बढ़-चढ़कर हैं। आत्म सम्मान के साथ जीना जानते हैं। दया की भीख नहीं माँग रहे। आप को सजग और सचेत कर रहे हैं। बस आज इतना ही काफी है। चिंतन व मनन अवश्य ही करें।

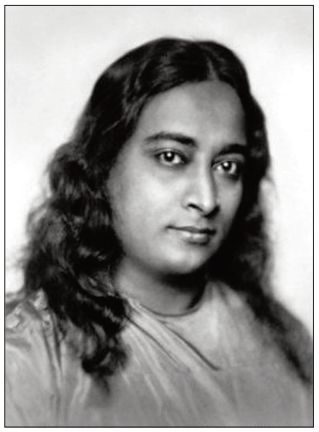

जीवन

- मनोज चतुर्वेदी, लखनऊ

हम सभी एक स्वस्थ, खुशहाल और सफल जीवन चाहते हैं। लेकिन क्या हमारा जीवन वैसा है, शायद नहीं। इसका कारण हमारे पिछले जन्मों की प्रवृत्तियां और इस जन्म के कर्म हैं। हमें हमारे पिछले जन्मों की याद नहीं और अगले जन्म का ज्ञान नहीं। लेकिन ईश्वर की कृपा से भारत में ऐसे संत हुए हैं जो ईश्वर की चेतना से परिपूर्ण थे और उन्होंने ऐसे विषयों पर प्रकाश डाला है।

ऐसे ही एक संत श्री परमहंस योगानंद्जी थे,जिन्होंने अपने जीवन काल में ही ईश्वर को पा लिया था। ईश्वर को पाना, ईश्वर की चेतना के साथ अपनी चेतना को एकाकार करना है। ईश्वरीय चेतना से परिपूर्ण संत भले ही शरीर छोड़ दें, लेकिन उनकी चेतना हमेशा ब्रह्माण्ड में विद्यमान रहती है और मानवता की सहायता करती है।

श्री परमहंस योगानंद्जी ने इस विषय पर अपने लेख में बड़े स्पष्ट रूप से लिखा है। इस लेख के विचार श्री परमहंस योगानंद जी के ही विचार हैं। मैंने उनके विचारों को सभी की भलाई के लिए लिखने का प्रयास मात्र किया है। मृत्यु पर भरोसा न करें कि मृत्यु हमें हमारे सभी दुर्गुणों से मुक्ति देगी। यदि ऐसा हो तो हम सब समुद्र में कूद पड़े और अगले जीवन में देवता बन कर निकलें। हम वैसे ही अगले जन्म में होंगे जैसे इस जीवन में हैं। मृत्यु से कुछ भी नहीं बदलता, सिर्फ ये शरीर छूटता है। यदि इस जीवन में हम विवेकशील, ईमानदार, परिश्रमी, जुझारू, दयावान, बुद्धिमान हैं तो इसके लिए हमने पिछले जन्मों में और इस जीवन में अथक प्रयास किए हैं और अगले जन्म में भी हम इन सब प्रवृत्तियों के साथ पैदा होंगे और यदि इस जीवन में हम आलसी, स्वार्थी या मिथ्यावादी हैं तो अगले जन्म में भी ये प्रवृत्तियां हमारे साथ होंगी और हम इन दुर्गुणों के साथ ही पैदा होंगे। जब तक हम अपने दुर्गुणों को छोड़ने का पक्का निर्णय नहीं कर लेते।

ईश्वर ने हमें एक शरीर, मन और आत्मा दी है। हमारा परम कर्तव्य है कि हम शरीर का उचित व्यायाम और उचित भोजन से, मन का सत विचारों और सत्कर्मों से और आत्मा का किसी ईश्वर प्राप्त संत के बताए रास्ते पर चल कर पूरी देखभाल करें।

हम सब में ही कुछ कमियाँ हैं जो हम छोड़ना चाहते हैं और कुछ गुण अपने में देखना चाहते हैं। हमें आज, अभी से प्रयास करना होगा वरना हम उन सभी प्रवृत्तियों के साथ पैदा होते रहेंगे। जब तक ये हमारे जीवन से हमारे प्रयासों से समाप्त नहीं हो जाते। हमें इसी जीवन में प्रयास करने होंगे। ये जीवन ही इन प्रयासों के लिए है।

इससे अच्छा समय फिर कोई नहीं होगा। हमारे प्रयास हमारी पूर्ण शक्ति से, पूरे मन से करने होंगे। हमारे प्रयास सफल होते हैं या नहीं इसकी चिंता न करें। ईश्वर हमारे प्रयास देखते हैं हमारे प्रयासों के फल नहीं। ईश्वर ने मनुष्य को अपनी सारी शक्तियाँ दी हैं। हम सिर्फ उन को इस्तेमाल करना नहीं जानते। ऐसी ही एक शक्ति है हमारी इच्छा शक्ति। यदि हम अपनी इच्छा शक्ति को इतनी शक्तिशाली कर लें तो हम कुछ भी कर सकते हैं। हमारी इच्छा शक्ति के पीछे हमारे ईश्वर की शक्ति छुपी हैं। हम जितना अपनी इच्छा शक्ति का इस्तेमाल करते हैं।

उतनी ही ईश्वर की शक्ति और आशीर्वाद हमें मिलता है। हम अपनी प्रचंड इच्छाशक्ति से अपने पिछले जीवनों के बहुत से कर्मफल मिटा सकते हैं। जरूरत बस अथक प्रयास की है। ईश्वर की कृपा और हमारे पूरे मन से किए गए प्रयासों से हम जीवन को बेहतर बना सकेंगे और अगला जीवन भी बेहतर होगा।

निवेदन

दिनांक 20 दिसम्बर 2021 तक (अन्नपूर्णा सहयोग राशि)

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित की योजनाओं जैसे अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति आदि के अंतर्गत प्रदान की जा रही है। अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वर्तमान सभापति डॉ. प्रदीप जी द्वारा सम्पूर्ण समाज से अधिक से अधिक शीघ्र सहयोग की अपील की गई है। वर्तमान में 39 लाभार्थी परिवारों को यह सहायता त्रैमासिक जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है। प्रत्येक परिवार क़ो अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वार्षिक 24,000/- रुपए भेजे जाते है। आप सभी से इस पुण्य कार्य में सहयोग की अपेक्षा है। इस सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2021-22 में अभी तक त्रैमासिक (अप्रैल-जून, जुलाई-सितंबर तथा अक्टूबर-दिसंबर) रू. 6,32,100/- राशि सीधे बैंक खाते ने स्थान्तरित की जा चुकी है।

वार्षिक सहयोग राशि 9 लाख रुपए अनुमानित है।

आपसे अनुरोध है कि 6 माह के लिए 12,000 रुपए या वार्षिक 24,000 रुपए की राशि का सहयोग करने की कृपा करें। समाज के निम्नांकित सम्मानित बान्धवों ने अन्नपूर्णा सहायता राशि का वर्ष 2021-22 में अपना अमूल्य योगदान किया है :-

1. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
2. श्री स्वयंभू चतुर्वेदी, बंगलोर - 12,000/-
3. श्री असीम चतुर्वेदी, अलीगढ़ - 12,000/-
4. श्री जयंत कुमार चतुर्वेदी लखनऊ (75वें जन्मदिन पर) - 7575/-
5. श्री मनोज चतुर्वेदी बैंगलोर - 12,000/-
6. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
7. सुश्री शिवानी चतुर्वेदी,बैंगलोर - 24,000/-
8. श्री आनंद श्री भास्कर एवं सुश्री जूही चतुर्वेदी -12,000/-
9. श्री अनुज चतुर्वेदी दिल्ली -12,000/-
10. श्री अविनाश जी, कानपुर - 12000/-
11. श्री जे. पी. चतुर्वेदी - 2500/-
12. सुश्री ममता चतुर्वेदी - 2100/-
13. डॉ. श्रीमती प्रीति मिश्रा, बीकानेर - 5000/-
14. श्रीमती कुमुद चतुर्वेदी - 50,000/-
15. श्री प्रतीक पांडे, नॉएडा - 12,000/-
16. कैप्टन अनिल चौबे, गुड़गाँव - 12,000/-
17. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
18. श्री मनोज चतुर्वेदी, सागर - 2,000/-
19. श्रीमती आरती चतुर्वेदी,लखनऊ - 12000/-
20. गुप्त सहयोग - 24000/-
21. स्व. श्री प्रभात चतुर्वेदी की स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी,कानपुर द्वारा -12,000/-
22. बाबू श्री ओंकार नाथ जी स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी,कानपुर द्वारा -12000/-
23. श्री निशीथ चतुर्वेदी USA - 5100/-
24. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
25. एड. सुभांग सौरभ चतुर्वेदी (लखनऊ) -2100/-
26. श्री पीयूष चतुर्वेदी (कमतरी/ बैंगलोर) - 12,000/
27. श्री संजय मिश्रा (कानपुर) - 2,100/-
28. श्री मनीष चतुर्वेदी (ग्वालियर) ने स्व. मुरलीधर चतुर्वेदी (ग्वालियर) की स्मृति में 12,000/-
29. सुश्री सौम्या (श्रीलंका), श्री कौस्तुभ (यूएसए) तथा श्री सुमेध (यूएसए) ने पिता श्री गणेश जी चतुर्वेदी (लखनऊ) के जन्मदिन के उपलक्ष्य में 12,000/-
30. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
31. डॉ. मनीष चतुर्वेदी, कोटा 12,001/-
32. श्री कृष्णकांत चतुर्वेदी (होलीपुरा/ लखनऊ) अपनी पत्नी शीला चतुर्वेदी की स्मृति में 12,000/-
33. श्री अनुराग चतुर्वेदी (होलीपुरा/गुरुग्राम) द्वारा आनंद सिंह परिवार की और से 15,000/-
34. श्री अपूर्व चतुर्वेदी (होलीपुरा/लंदन) सुपुत्र डा. प्रदीप चतुर्वेदी (सभापति) द्वारा जन्मदिन पर 12,000/-
35. गुप्त सहयोग 24,000/-
36. श्री मनीष चतुर्वेदी,गुरुग्राम -12000/-
39. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
40. श्री के.सी. पांडे,नोयडा -12000/-
41. श्री देवेंद्र नाथ कौशाम्बी - 12000/-
42. श्रीमती आशा चतुर्वेदी, दिल्ली - 48000/-
43. महासभा के संरक्षक श्री मदन कुमार जी (होलीपुरा/कलकत्ता) ने अपनी माता स्व. मालती देवी जी की पावन स्मृति में - 24000/
44. श्रीमती कुसुमलता चतुर्वेदी,कोटा - 12000/-
45. श्रीमती निर्मला चतुर्वेदी,भोपाल ने स्व. सुबोध चंद्र जी की स्मृति में - 5000/-
45. श्री भुवनेश चौबे, गोंदिया ने अपने जन्मदिन पर -11000/-
46. श्रीमती करुणा चतुर्वेदी की ओर से स्व. सत्यदेव चतुर्वेदी की स्मृति में आलोक चतुर्वेदी (अनूपशहर/कोलकाता) द्वारा - 6000/-
47. श्री राजीव चतुर्वेदी (होलीपुरा/ कानपुर / दिल्ली) द्वारा Rs 24000/-
48. कर्नल आलोक चतुर्वेदी। (चंद्रपूर/ ग्रेटर नॉएडा) Rs. 5000/-
49. डॉ दिवाकर नाथ चतुर्वेदी, भोपाल ने पुरा कन्हैरा में निर्मित जौनमाने शादी हॉल के शुभ अवसर पर - 12000/-
50. स्व. श्रीमती संध्या मिश्र की स्मृति में उनके पति श्री संजय मिश्र (मैनपुरी/कोटा/मुंबई) द्वारा - 12000/-
51. श्री अतुल चतुर्वेदी, लखनऊ - 2001
52. श्री पंकज चतुर्वेदी, टोंक ने अपने पिता स्व. महावीर प्रसाद जी की स्मृति में - 5000/-

वित्तीय वर्ष 2021-22 में
प्राप्त सहयोग राशि - **रु. 6,34,077/-**
वित्तीय वर्ष 2021-22 में
हस्तांतरित राशि - **रू 6,32,100/-**
सभी को विनम्रतापूर्वक आभार
सहयोग राशि भेजने के लिए :-
मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, **Mob. 9871170559**

संध्या मिश्र: एक महीन संतुलन

- प्रखर मिश्र, मुम्बई

जनवरी 2022 में मेरी माँ - संध्या मिश्र - को गुजरे एक साल हो गया। हर दिन, हर पल, हर क्षण उनके बारे में बहुत सी बातें हैं जो याद आती हैं। यह उत्सुकता की बात है कि उनका डांटना याद किया जाता है। लेकिन, ऐसा ही जीवन है। उन्होने जो सीख दी, जो पाठ पढ़ाये, जो बलिदान दिया, जो उपहार खरीदे और जो मूल्य उन्होंने सिखाये। वे सभी उनके रूप में मेरे साथ रहते हैं।

शास्त्रों में लिखा हैं कि हर व्यक्ति तीन बार मरता है। सबसे पहले, जब भौतिक शरीर पर्यावरणीय उत्तेजनाओं का जवाब देना बंद कर देता है। दूसरा, जब व्यक्ति की आत्मा शरीर के 13 दिनों के भीतर पृथ्वी से विदा हो जाती है। तीसरा, जब उस व्यक्ति का नाम ग्रह पर आखिरी बार लिया जाता है। मेरी माँ के कर्मों की वजह से मुझे पता है कि वह लंबे, बहुत लंबे समय तक हमारे साथ रहेंगी।

वैसे तो मेरी माँ के जीवन पर किताबें लिखी जा सकती हैं, लेकिन एक चीज़ है जिससे मैंने अपनी मां का अनुकरण करने की कोशिश की है। अपने जीवन में कैसे खुद की इच्छाओं और सामाजिक उम्मीदों में संतुलन बनाये रखना। उनके जीवन में ऐसे तीन उदाहरण उपयोगी हैं।

पहला, उन्होंने दयालुता होने और आक्रामकता के बीच संतुलन दिखाया। माँ में एक व्यक्ति के दर्द को महसूस करने और उस व्यक्ति की ओर से न्याय के लिए लड़ने के लिए अपने आप में साहस खोजने की अद्वितीय क्षमता थी। सभी सहेली,मित्र, भाई, बहन, भतीजे, भतीजी उनके इस गुण से प्रभावित थे। एक बार नहीं, दो बार नहीं, बल्कि अपने जीवन में बार बार उन्होंने अपने व्यक्तित्व का यह संतुलन दिखाया है। और संकट में पड़े लोगों की मदद की, चाहे वे कितने ही करीबी या दूर के दोस्त या रिश्तेदार क्यों न हों।

दूसरा, वह ऐसी व्यक्ति थी जो हमेशा एक समूह में अपना व्यक्तिगत व्यक्तित्व बनाए रखती थी। फिर भी समूह के भीतर एक होकर रहतीं। वह अपनी सोच को आगे बढ़ाने में सक्षम थी। साथ ही वह खुद की इच्छाओं की परवह ना करते हुए, दूसरे की भावनाओं का हमेशा सम्मान करती थीं । उनके मार्गदर्शक सिद्धांत सुनिश्चित करते थे कि किसी को उनकी कार्य से नाराज़गी न हो। कई क्षणों में उन्होंने अपने सिद्धांतों पर पुर्नविचार कर, परिस्थिति के अनुकूल निर्णय लिया। स्थिति की व्यावहारिकता, अपने व्यक्तिगत इच्छाओं और आकाँक्षाओं के बीच का संतुलन मेरी माँ का जीवन सिखाता है।

तीसरा, मेरी माँ अपने परिवार की भलाई के लिए प्रतिबद्ध थी। उन्होंने अपनी इच्छाओं व अपने परिवार के सदस्यों की भावनाओं के बीच सामंजस्य रखा। उनका जीवन उनके बेटे और उनके पति की भलाई के लिए समर्पित था। वह एक मास्टर पेंटर थी, लेकिन वह हमेशा घर के काम के साथ उस गतिविधि को प्रबंधित व संचालित करती थी। वह अपने आप में विश्वास, प्रतिबद्धता और धैर्य के बिना ऐसा नहीं कर सकती थी। 2020 में भी जब उनका बार बार अस्पताल जाना हो रहा था, तब भी हमारी चिंता उनको हमारी थी। उन्होंने अपने सुख और दुःख दोनों ही अपने परिवार के साथ संतुलित किये। जीवन की आपा-धापी में व्यक्ति अपने व अपनों से दूर हो जाते हैं। न जाने कैसे पर माँ ने ऐसा नहीं होने दिया। यह बात चौंका देने वाली भी है और उनके व्यक्तित्व के सन्दर्भ में मुमकिन भी है। मेरे जीवन में संतुलन बनाकर चलना, मेरी माँ ने मुझे सिखाया।

अपील (गुल्लक योजना)

16.12.21

जैसा कि आप सभी को विदित है कि डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, सभापति, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा ने सन 2020 में महासभा की सहायतार्थ तथा आर्थिक स्वावलम्बन के लिए एक अनूठी गुल्लक योजना का शुभारम्भ किया था। इस के माध्यम से कामधेनु की पर्याय गाय की प्रतिकृति क़ी एक गुल्लक सभी बांधवों क़ो प्रति परिवार एक के हिसाब दी गयी थी। इस गुल्लक में बांधवों द्वारा पूजा में चढ़ाए पैसे, उठाऊने के पैसे, भगवान के लिए निकाल कर पैसे आदि आदि अवसरों पर थोड़ी थोड़ी मात्रा में एकत्र की गयी धन राशि को संग्रहित कर मकर संक्रांति (जनवरी मास) तथा दुर्गा पूजा के समय महासभा के अकाउंट में सीधे जमा करने का आग्रह किया गया था। इसी श्रृंखला में दीपोत्सव के समापन पर महासभा क़ो गुल्लक प्राप्त धन राशि निम्न प्रकार से है :-

1. डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी,दिल्ली – 2100/-
2. श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, भोपाल -1001/-
3. श्री धीरेंद्र नाथ चतुर्वेदी, कानपुर – 1180/-
4. श्री भरत कुमार चतुर्वेदी, रिषड़ा – 1000/-
5. श्री पदम कुमार चतुर्वेदी, लखनऊ – 1000/-
6. श्री अभयराज चतुर्वेदी, गुरुग्राम – 1000/-
7. श्री संजय मिश्रा, कानपुर. -1001/-
8. श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, भोपाल – 1000/-
9. श्री अखिलेश चतुर्वेदी,लखनऊ – 2240/-
10. श्री कैलाश चंद्र चतुर्वेदी, कासगंज -1000/-
12. श्री महेश चंद्र चतुर्वेदी,दिल्ली -3100/-
13. CA श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी नागपुर -2100/-
14. श्री विशाल चतुर्वेदी, पुरा – 1001/-
15. श्री दिलीप चतुर्वेदी, लखनऊ 500/-
16. श्री ललित चतुर्वेदी, लखनऊ 2000/-
17. श्री विपिन चतुर्वेदी, लखनऊ 1000/-
18. श्री भुवनेश चौबे, गोंदिया -1100/-
19. श्री प्रदीप चतुर्वेदी, आगरा – 500/-
20. श्री पुनीत चतुर्वेदी, आगरा -500/-
21. श्री आशुतोष चतुर्वेदी, कानपुर -1100/-
22. श्री रोमित चतुर्वेदी,कानपुर -550/-
23. श्री भारत चतुर्वेदी,कानपुर -550/-
24. श्री मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, नोयडा – 1470/-
25. प्रदीप चतुर्वेदी (संजू), गाज़ियाबाद -1000/-
26. श्री कमलेश चन्द्र पांडे, नोयडा -1100/-
27. श्री नील कमल चतुर्वेदी, कोलकाता -2500/-
28. श्री खगेश चतुर्वेदी, आगरा 5100/-
29. श्रीमती बीना मिश्रा, हैदराबाद 2400/-
30. श्री करूणेश चतुर्वेदी, ग्वालियर 1500/-
31. डॉ. मनोज चतुर्वेदी, ग्वालियर – 1000/-
32. श्री दिवस चतुर्वेदी, लखनऊ – 1100/-
33. श्री योगेंद्र नाथ चतुर्वेदी, ग्वालियर 1000/-
34. श्री अविनाश चंद्र चतुर्वेदी,कानपुर -2001/-
35. डॉ. मनीष चतुर्वेदी,कोटा – 1011/-
36. श्री पंकज चतुर्वेदी मुंबई 1100/-
37. श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी, ग़ाज़ियाबाद – 2061/-
38. श्री सुरेश चंद्र चतुर्वेदी, कोलकाता – 2100/-
39. श्री अभिषेक चतुर्वेदी, ग्वालियर -500/-
40. श्री अनिल चतुर्वेदी, सूधे बाबू,आगरा -1000/-
41. श्री चंद्रकांत चतुर्वेदी, हैदराबाद – 2100/-
42. श्री सौरभ चतुर्वेदी, लखनऊ – 501/-
43. श्रीमती रश्मि भरत चतुर्वेदी, लखनऊ – 250/-
44. श्री अरुण चतुर्वेदी, नागपुर -2100/-
45. श्री मोहित चतुर्वेदी – 1100/-
46. श्री अतुल चतुर्वेदी,लखनऊ – 1000/-

कुल जमा राशि = 61,517/-

आप से निवेदन है कि महासभा क़े account में गुल्लक योजना की राशि जमा कर कृतार्थ करे ।

Account विवरण :-
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account no : 1006238340
IFSC CODE : CBIN0283533
Branch : Central bank of India
Anand Vihar Delhi
विनम्र अग्रिम धन्यवाद
निवेदक
मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
9871170559

"बाबा"

विनम्र श्रद्धांजलि-श्री दयाशंकर चतुर्वेदी (होलीपुरा/कानपुर) - 1930-2021

- पारुल चतुर्वेदी, कुवैत

सुबह सवेरे ४ बजे हैं
सूरज भी सोया है अब तक,
अवाज़ रेडियो की आने लगी
बाबा के कमरे से तब तक।

शॉर्ट वैव, सीलोन, बी बी सी
और किसी की अंग्रेज़ी बक-बक,
सुनते हैं जाने शौक से क्या-क्या
जो सुन सुन के हम गये हैं पक।

सन सत्तावन का वही रेडियो
वही जगह उसकी अब तक,
ढूँढ के लायें भी नया तो
नहीं चाहिये उससे अलग।

प्रोग्राम भी वही चाहिये
सुनते रहे हैं जो सालों तक,
आ गये कहीं गाने नये तो
मूड खराब है शाम तलक।

कभी पुराने आ जायें जो गाने
सुनते हैं क्या डूब के तब,
मन का जैसे कोई तार छिड़ गया
गुनगुनाते भी हैं साथ में अब।

बारहों महीने चारों रुत
बारिश हो या ठंड कड़क,
पौ फटे छड़ी लिये हाथों में
चल पड़ें टहलने उसी सड़क।

तेज़ गति से चलते हैं
धर के लंबे लंबे पग,
साथ जो उनके दादी चलें तो
आधे ही रस्ते जायें थक।

टोली है उनके साथियों की
फ़ैन हैं चौबे जी के सब,
जो भी टहलने ना आयेगा
डाँट खायेगा उनसे अब।

टोली में हैं डॉक्टर सारे
घर में कोई बीमार पड़े जब,
एक फ़ोन पे आ जाते हैं
इज्जत इतनी करते हैं सब।

कोई बनारस से आ जाये
या मिल जाये यार पुराना जब,
चालू हो जाते हैं घंटों तक
बी.एच.यू के किस्से सब।

टी.वी के आगे कालीन पे
लेट के देखें प्रोग्राम सब,
और कहीं आ जाये मुशायरा
तो ना चैनल बदलेगा अब।

काँग्रेस के बड़े विरोधी
बी.जे.पी के बड़े हैं भक्त,
बाकी सारे नेताओं पे
गालियाँ पड़ती हैं सख्त।

अखबार पढ़ने का है शौक
हिन्दी हो या अंग्रेजी सब,
और ये नहीं कि बस हेडलाइन पढ़ें
मैटर भी पढ़ना है सब।

गुस्से में तो परशुराम हैं
आ जाये तो पूछो मत,
शामत सबकी आ जाती है
कहो उठा लें सर पे छत।

भोले भाले हैं फिर भी
जो कह दो मान लें सब,
चीज़ हज़ार की सौ की बता दो
खुश हो जाते हैं वो तब।

खुद पे खर्च नहीं करते हैं
जोड़ के रखा पैसा सब,
कमी किसी को हो न जाये
जाने पड़ जाये ज़रूरत कब।

ए.सी हीटर नहीं चलाते
बिजली बिल जायेगा बढ़,
ठिठुरता देख चला दे कोई
तो उससे भी जायेंगे लड़।

जम के मेहनत की उम्र भर
खुद उठाया न कोई सुख,
किस्मत की भी मार देखिये
मिले कई जीवन में दुख।

जीते उसी ज़माने में हैं
जिसको बीत गये ज़माने अब,
पता नहीं नये तौर तरीके
जीने के बदले ढँग हैं सब।

पढ़ाई, पैसे, सेहत की कीमत
उनसे जाके सीखें सब,
जीवन जीने का सादा तरीका
भूल गये हम सारे अब।

डर के रहते थे उनसे सारे
आज याद करते हैं सब,
प्यार जताने का उनका तरीका
समझे हैं हम जाके अब।।

(र.क्र.-773)

शाखा समाचार

लखनऊ

दिनाँक 12 दिसंबर 2021 को श्री माथुर चतुर्वेदी मंडल, लखनऊ की आमसभा की मीटिंग में सत्र 2021–2023 के लिए निर्वतमान अध्यक्ष श्री लेखेंद्र पुत्तन जी एवं श्री बिनय जी के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति विपिन जी (मोती नगर) को अध्यक्ष, शिशिर जी (चारबाग) को मंत्री एवं श्रीमती पूनम जी (पेपर मिल) को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। सभा का संचालन सर्वश्री पदम जी (इंदिरा नगर), दिनेश जी (ओमेक्स सिटी) एवं देवेंद्र खुनखुन जी (एल्डिको) ने किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने बिनय जी, पुत्तन जी के साथ ही चुनाव संपन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने हेतु खुनखुन जी, पदम जी और दिनेश जी का भी आभार प्रकट किया। नवनिर्वाचित मंत्री शिशिर जी ने सदन में उपस्थित सर्वश्री रमेश जी, पंकज जी, भारत भूषण जी , आनंद जी, अजय जी, नितिन जी, अतुल जी , दिलीप सिकन्दरपुरिया जी, प्रफुल्ल जी, गुल्लन जी, निखिल जी, यदुवेश जी (द्वय), ललित जी, प्रदीप जी, नीरज जी, दिवाकर जी, सुनील जी, प्रभात जी, संजीव जी, जॉनी जी, मुदित जी एवं अन्य सभी को धन्यवाद देते हुए सभी से सक्रिय सहयोग का अनुरोध किया। सदन ने संतोष जी (पिनाहट/चारबाग) का भी विशेष तौर पर आभार प्रकट किया। जिनके द्वारा सर्व सुविधायुक्त स्थान एवं पिनाहट की स्वादिष्ट गुजिया के साथ जलपान की सुंदर व्यवस्था की गई थी। अंत में नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं मंत्री ने सदन को बताया कि बहुत जल्द नई कार्यकारिणी आप सबके समक्ष प्रस्तुत करेंगे। फिर कार्यकारिणी की बैठक के बाद खेलकूद, पिकनिक और होली मिलन की तिथियों की घोषणा करेंगे।

– **विपिन कुमार,** अध्यक्ष

–0–

कानपुर

दिनाँक 5 दिसंबर 2021 को बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी धर्मशाला, कानपुर में श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर की कार्यकारिणी की बैठक संपन्न हुई। जिसमें सभा की बैलेंस शीट का कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा अनुमोदन किया गया। दिनांक 25 दिसंबर 2021 को रक्तदान मधुमेह एवं नेत्र विकार शिविर चिकित्सा प्रकोष्ठ के द्वारा कराए जाने का प्रस्ताव पारित हुआ तथा 9 जनवरी 2022 को सांस्कृतिक कार्यक्रम, मेधावी छात्रों का सम्मान एवं सामाजिक मिलन कार्यक्रम का प्रस्ताव भी पारित हुआ। कानपुर सभा के द्वारा चिकित्सा प्रकोष्ठ का गठन किया गया था आज चिकित्सा प्रकोष्ठ का बनना सार्थक हुआ।

अभी हाल में अपनी धर्मशाला में हुए एक विवाह समारोह में एक बांधव को व्हीलचेयर की आवश्यकता होने पर उनको व्हीलचेयर उपलब्ध करा दी गई। जिससे उन्होंने पूरे विवाह में 2 दिनों तक उस व्हील चेयर के माध्यम से ही पूरा विवाह का आनंद उठाया। इससे वशीभूत होकर उन बांधव ने 11000/– दान स्वरूप कानपुर सभा को भेंट किये। इसी क्रम में दो हॉस्पिटल बेड मैट्रेस के साथ कानपुर समाज के बंधुओं द्वारा कानपुर समाज के बंधुओं की सेवा के लिए कानपुर सभा को भेंट किए हैं। श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर उपरोक्त बंधुओं का हृदय से आभार व्यक्त करती है।

– **प्रवेश चतुर्वेदी, महामंत्री**

–0–

ग्लोबल चतुर्वेदी महासभा शाखा

भारत से बाहर रह रहे माथुर चतुर्वेदी परिवारों की हमेशा से यह अभिलाषा रही कि भारत में रह रहे अपने चतुर्वेदी समाज से और माथुर चतुर्वेदी महासभा से जुड़े रहें। कोविड महामारी के इस समय में संचार तकनीक का तीव्र गति से विकास हुआ और ऑनलाइन मीटिंग के माध्यम से महासभा के भी आयोजन अनवरत सफलता पूर्वक चलते रहे। महासभा के सभापति डॉक्टर प्रदीप चतुर्वेदी और आई. टी. प्रकोष्ठ के प्रोत्साहन से समाज के कुछ प्रवासी स्वयंसेवक आगे आये और माथुर चतुर्वेदी महासभा की वैश्विक शाखा के गठन की परिकल्पना बनी। इंटरनैट द्वारा सदस्यता हेतु आवेदन पत्र उपलब्ध किये गये।

जिन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका से लेकर सिंगापुर तक फैले हुए माथुर चतुर्वेदी परिवारों ने भरा। 4 दिसम्बर 2021 को इस वैश्विक शाखा की प्रथम मीटिंग महासभा के ऑनलाइन प्लैट्फ़ॉर्म पर ज़ूम सॉफ़्टवेयर के माध्यम से सम्पन्न हुई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. प्रदीप जी थे। कार्यक्रम का संचालन कुवैत की अनुपमा जी ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अटलांटा (यू.एस.ए) में रह रहीं ज्योति जी की गणेश वन्दना से हुआ। इसके पश्चात प्रदीप जी ने इस प्रयास की सराहना करके सभी का उत्साहवर्धन किया। ज्ञानेंद्र जी ने महासभा द्वारा इंटेरनैट के माध्यम से चल रहे अन्य आयोजनों के बारे में बताया। ज्योति जी ने महासभा का इतिहास और सदस्यता की प्रक्रिया बताते हुए महासभा के स्थापक पूर्वजों को नमन किया। अनुपमा जी ने इस वैश्विक शाखा का उद्देश्य और प्रारूप बताया और अगले कुछ कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। टैक्सस, यू.एस.ए. में रह रहीं स्मिता जी ने शाखा की सदस्यता की प्रक्रिया और सम्पर्क के माध्यमों के बारे के जानकारी दी। तत्पश्चात सभी उपस्थित परिवारों ने अपना परिचय दिया और रामचरितमानस की अपनी पसंदीदा चौपाईयाँ और गीता के श्लोक सुनाये। कार्यक्रम का समापन अनुपमा जी के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।

– **ज्योति चतुर्वेदी,** (अटलांटा)

समाज समाचार

* भुवनेश जी, गोंदिया ने अपने जन्मदिन दिनाँक 29 नवंबर 2021 अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 11000/- रुपये प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.-771)

* स्व. श्रीमती संध्या मिश्र की स्मृति में उनके पति श्री संजय मिश्र (मैनपुरी/कोटा/मुंबई) द्वारा अन्नपूर्णा सहायतार्थ 12000/- प्रदान किए। (र.क्र.-794)

* चि. सचिन सुपुत्र श्रीमती भावना चतुर्वेदी एवं श्री यशवंत चतुर्वेदी सुपौत्र श्रीमती पुष्पा चतुर्वेदी एवं स्व. श्री कौशलेंद्र नाथ चतुर्वेदी (कोठी कैस्थ जसवंत नगर, इटावा) का शुभ विवाह सौ.कां. गौरी सुपुत्री श्रीमती रीना चतुर्वेदी एवं श्री चंद्रशेखर चतुर्वेदी सुपौत्री श्रीमती रजनी चतुर्वेदी एवं स्व. श्री प्रहलाद चतुर्वेदी (हिंडौन/आगरा) के साथ दिनांक 01/12/21 को सम्पन्न हुआ।शुभ विवाह के उपलक्ष्य रूपये 1001/ चतुर्वेदी महासभा व चतुर्वेदी चंद्रिका सहायतार्थ 1100/- प्रदान किए। बधाई। (र.क्र.-782)

* महासभा के संरक्षक श्री मदन कुमार जी,होलीपुरा/कलकत्ता ने अपनी पूज्य माता स्व0मालती देवी जी की पावन स्मृति मे अन्नपूर्णा सहायतार्थ एकत्र परिवार को एक वर्ष हेतु 24000/- प्रदान किए।

* चि. आशुतोष (अंशुल) सुपुत्र श्री चंद्रभान चतुर्वेदी सुपुत्र श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन/ जयपुर) का शुभ विवाह सौ. प्रिया चतुर्वेदी सुपुत्री श्री हरी प्रसाद चतुर्वेदी (गंगापुर सिटी) के साथ दिनाँक 28/11/2021 को हर्षोल्लास से संपन्न हुआ। इस अवसर पर नीरज जी,हिंडौन (वरिष्ठ का.सदस्य, महासभा) ने महासभा सहायतार्थ 1001/- रुपये व पत्रिका सहायतार्थ 1100/- रुपये प्रदान किए। (र.क्र.-780)

* चि. हनीष चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती शोभा एवं श्री गोरखनाथ चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. गौरा देवी एवं स्व. त्रिवेणी सहाय पांडेय (तालगांव/ दिल्ली) का शुभ विवाह सौ. अंतरा चतुर्वेदी सुपुत्री श्रीमती रंजना एवं श्री दिगंत चतुर्वेदी सुपौत्री श्रीमती प्रभा एवं स्व. मारुति शरण चतुर्वेदी (इटावा/ भिलाई) के साथ दिनांक 11.12.21 को संपन्न हुआ। इस अवसर पर चतुर्वेदी चंद्रिका सहायतार्थ 1100/- एवं चतुर्वेदी महासभा सहायतार्थ 1100/- प्रदान किए। बधाई। (र.क्र.784)

* चि. प्रांकित सुपुत्र श्रीमती अपर्णा - विवेक सुपौत्र स्व. श्रीमती कमला देवी- स्व. सतीश चंद जी का शुभ विवाह दिनांक 7-12-2021 को भोपाल में सौ. स्नेहा पुत्री गुंजन -सुदीप, सुपौत्री स्व. सरोजिनी- स्व. विश्वनाथ के साथ सानंद संपन्न हुआ। विवाह के अवसर पर विवेक जी (पुरा/भोपाल) ने 500/- चतुर्वेदी चंद्रिका एवं 500/- महाविद्या देवी के लिए भेंट किए साथ ही आपने कानपुर धर्मशाला हेतु 500 रूपये प्रदान किये। (र.क्र.-790)

* चि. हितेष सुपुत्र श्रीमती रेखा - श्री सुभाष चंद्र चतुर्वेदी का (पुरा कन्हैरा) का शुभ विवाह सौ. प्रियांशी सुपुत्री श्रीमती सुलेखा चतुर्वेदी - श्री कौशल चतुर्वेदी (सीतापुर) के साथ दिनांक 28.11.2021 को ग्राम पुरा कन्हैरा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री भरत चतुर्वेदी (भोपाल) ने पत्रिका सहायतार्थ 500/- प्रदान किए। (र.क्र.-791)

* डॉ. दिवाकर नाथ चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री दुर्गा प्रसाद - रामदेई चतुर्वेदी (पुरा कन्हैरा/ भोपाल) द्वारा ग्राम पुरा कन्हैरा में निर्मित जौनमाने मैरिज हाउस के लोकार्पण के अवसर पर महासभा की अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/- प्रदान किए। बधाई। (र.क्र.-792)

* श्री सुदेश चतुर्वेदी सुपुत्र स्व.श्री कौशलेंद्र नाथ जी चतुर्वेदी (कोठी कैस्त, जसवंत नगर,इटावा/जयपुर) का हाल ही में रामदेव फूड प्रोडक्ट्स लिमिटेड, अहमदाबाद

कंपनी में जयपुर हेड क्वार्टर पर मार्केटिंग मैनेजर के पद पर प्रमोशन हुआ है। इस शुभ अवसर पर उन्होंने रुपए 501/ महासभा को भेंट किए। (र.क्र.–783)

* श्रीमती विभा एवं श्री अतुल चतुर्वेदी सुपुत्र श्री महेश चन्द्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/लखनऊ) ने अपनी पुत्री सौ. तुषिता एवं चि. मेहुल सुपुत्र श्री शिवकुमार जी (अंकलेश्वर) के साथ 28 नंबवर 2021 को भरुच में संपन्न विवाह के शुभ अवसर पर अतुल – विभा जी ने पत्रिका सहायतार्थ 500/–, महासभा सहायतार्थ 500/– ,महाविद्यादेवी मंदिर सहायतार्थ 501/–, गुल्लक योजना 1000/–, अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 2000/– रुपये प्रदान किये। (र.क्र.–796)

* श्री गिरिराज किशोर,काका एवम श्रीमती सुनीला चतुर्वेदी (मैनपुरी/कानपुर/मुम्बई) ने अपने सुपुत्र चि. विशाल एवम सौ. आकांक्षा सुपुत्री श्री अनुपम –श्रीमती संगीता (मैनपुरी/उज्जैन) के साथ दिनाँक 9 दिसम्बर 2021 को उज्जैन में संपन्न शुभविवाह के अवसर पर 501/– महासभा सहायतार्थ व 501/– पत्रिका सहायतार्थ प्रदान किये। (र.क्र.–803)

शोक समाचार

* श्री पराग चतुर्वेदी सुपुत्र स्व.श्री शरद चंद्र चतुर्वेदी (रीवा/जबलपुर) का असामायिक स्वर्गवास दिनाँक 25/11/2021 को लगभग 45 वर्ष की अल्पायु में मुंबई में हो गया।

–0–

* श्री संतोष चंद्र चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री कमलापत चौबे (करहल/आगरा/देहली) का स्वर्गवास दिनाँक 5/12/2021 को अपने निवास पर देहली में हो गया।

–0–

* श्रीमती शशी चतुर्वेदी पत्नी स्व.नरेंद्र कुमार चतुर्वेदी (मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनाँक 01/12/2021 को मैनपुरी में हो गया।

–0–

* श्री दीपक चतुर्वेदी(सिकन्दरपुर खास/कोलकाता) पुत्र स्वर्गीय भीमसेन जी का स्वर्गवास 27 नबम्वर 21 को लगभग 57 वर्ष की आयु में कोलकाता में हो गया।

–0–

* श्री महेन्द्र चतुर्वेदी सुपुत्र स्व.श्री रघुवर दयाल (दानपुर) का देहावसान दिनाँक 04/12/21 को 60 वर्ष आयु में हो गया।

–0–

* सुश्री सिद्धन चतुर्वेदी पुत्री स्व.कैलाश नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा) का स्वर्गवास दिनाँक 10/12/21 को होलीपुरा में हो गया।

–0–

* श्रीमती तृप्ता चतुर्वेदी पत्नी श्री सलिल चतुर्वेदी (कमतरी / कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 11/12/21 को कानपुर में हो गया।

–0–

* श्रीमती रजनी चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री प्रहलाद चतुर्वेदी (हिंडौन/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 15/12/2021 को हो गया।

–0–

* श्री गोविन्द बल्लभ जी पुत्र स्व. बद्रीलाल जी चतुर्वेदी (बटेश्वर/जमशेदपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 18 दिसम्बर 2021 जमशेदपुर में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

प्रथम पुण्यतिथी स्मरण ...

05-05-1961 04-01-2021

स्व. श्रीमती संध्या मिश्र

पुत्रवधु - स्व. श्री प्रमोद चंद्र चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती शांती चतुर्वेदी

पत्नी - श्री संजय मिश्र, पुत्र - प्रखर मिश्र

एवं समस्त शोकाकुल चतुर्वेदी परिवार, (कोटा/जयपुर)

चल दिए लिए अपना संबल,
तय करने को निज पथ अवशेष ।
छोड़ गए स्वर्णिम स्मृतियाँ,
परिजन को देती संदेश ॥

संजय मिश्र, २००१, क्रिप्टन टावर, न्यु प्रभादेवी रोड,
प्रभादेवी मुंबई, 400025, मो. 9810607145

(र.क्र. 2021/801)

स्व. श्री राजकुमार चतुर्वेदी

कहते हैं सब तुम्हारा अंत अच्छा था
चुप चाप छोड़ गए तुम हम सब को,
आज अकेले पड़ गए हम सब
जानते हैं तुम देख रहे हो हम सब को !
आज घर सूना लगता है , सब उजाला तुम ले गए
हर सुबह की धूप ये कहती है
तुम्हारे आने से स्वर्ग भी रोशन हो गया,
आँखें नम हो जाती हैं , याद हर वक़्त आती हैं
पापा तुम जहां भी रहना खुश रहना
यही प्राथना हम सब की है !

मेरठ में १७ सितंबर १९३८ को राज बहादुर चौबे और रानी कुंवर के पुत्र राज कुमार चतुर्वेदी ने जन्म लिया। स्व श्री रमेश चन्द्र जी (बाबुआ), स्व श्री रजेन्द्रा , स्व श्री धनेन्द्र और बहन स्व श्रीमती प्रेम कुमारी के सब से छोटे भाई बच्चे बाबू के नाम से विख्यात थे। मेरठ से अपनी पढ़ाई पूरी कर वे मेरठ, दिल्ली, बंगलोर रेस क्लब में कार्यरथ रहे। १९७७ में कलकत्ता रेस क्लब से जुड़े और १९९९ में सेवानिवृत हुए। राज कुमार जी बहुत ही शान्त स्वाभाव के व्यक्ति थे, जो भी उनसे मिलता था उनके सरलता और हँसमुख स्वाभाव से मोहित हो जाता था। अपना सारा जीवन उनहोने सादगी से और परिवार के प्रति स्नेह और ज़िम्मेदारी से बिताया। **"Simple Living and High Thinking"** और **"Do thy duty, reward is not thy concern"** उनके मूल मंत्र थे। आज कल की व्यस्त जीवन में जहां लोगों को अपनो के लिये भी समय नही, जो उनके सम्पर्क में आया उन सब से उन्होने एक अलग ही व्यकतिगत रिश्ता बनाया, चाहे वंह किसी भी उम्र के हों। यह उनकी एक अनूठी सराहनीय प्रतिभा थी। अपने परिवार में "बच्चे चाचा" और ससुराल में "साब जी" से संबोधित किए जाते थे। १३ नवंबर २०२१ को वे अचानक अपने पीछे अपनी धर्म पत्नी श्रीमती गीता, बेटे अमित, पुत्र वधू अनुरिता, पौत्री आहाना-आलिशा, बेटी मानसी, दामाद अंकुर और नातिन ऐशानी-कशवी को छोड़ गए।

पिता वह इंसान होता है जो कभी सामने नही आता, अपने परिवार और बच्चों की हर इच्छा पूरी करता है पर कभी नहीं जाताता। पिता का हाँथ बेटे बेटी के कांधे पर शाबाशी देने को उठता है और सदा सर पर आशीर्वाद बन कर रहता है। हर पिता को अपने बच्चों पर गर्व होता है पर आज मैं उनकी बेटी मानसी और उनका बेटा अमित अपने पिता राज कुमार चतुर्वेदी पर गर्व करते हैं। ईश्वर से प्रार्थना है की वे उन्हे हमेशा प्रसन्न रख्खे!

शोकाकुल परिवार

धर्म पत्नी श्रीमती गीता,
पुत्र- पुत्र वधू अमित- अनुरिता,
पौत्री आहाना-आलिशा,
पुत्री-दामाद मानसी-अंकुर
नातिन ऐशानी-कशवी
समस्त परिवार

(र.क्र. 2021/781)

भावपूर्ण श्रध्दांजली

जन्म १५ जनवरी १९४६

स्वर्गवास : २१ नवंबर २०२१

स्व. श्री अवधेशचन्द्रजी चतुर्वेदी

पत्नी – कश्मीरा चतुर्वेदी

पुत्री – नीतू चतुर्वेदी, दामाद – लक्ष्मीकांत चतुर्वेदी

पुत्री – कविता चतुर्वेदी, दामाद – मोहित चतुर्वेदी

पुत्री – पूजा चतुर्वेदी, दामाद – दीपेश चतुर्वेदी

लोहित चतुर्वेदी, मानवेन्द्र चतुर्वेदी, श्रृती चतुर्वेदी

मल्लिश्का चतुर्वेदी (दोहीता-दोहती)

भाई – अशोक चतुर्वेदी, शीला चतुर्वेदी

भतीजा – संदीप चतुर्वेदी, अमिता चतुर्वेदी

भतीजा – क्षितिज चतुर्वेदी, सीमा चतुर्वेदी

भतीजा – अमित चतुर्वेदी, मोनिका चतुर्वेदी

भतीजी – रेणू चतुर्वेदी, दामाद – आलोक चतुर्वेदी

भतीजी – क्षमा चतुर्वेदी, दामाद – कल्पेश चतुर्वेदी

भतीजी – मीता चतुर्वेदी, दामाद – डॉ. संजय चतुर्वेदी

भतीजी – जॉली चतुर्वेदी, दामाद – नूतन चतुर्वेदी

एवं समस्त चतुर्वेदी परिवार ३/११५, मालवीय नगर, जयपुर

C- 1221, 5th Avenue , Gaurcity-1, Greater Noida West (UP)

ससुराल पक्ष

सरजुप्रसाद, हेमंतकुमार, देवेन्द्रनाथ, मनोजकुमार,
नागेन्द्रनाथ, विरेन्द्रकुमार, भुवनेशकुमार, परितोष
गोंदिया (पुराकन्हेरा)

(र.क्र. 2021/800)

स्मृति शेष

स्व. श्रीमती सरोज
पत्नी स्व. श्री दयानंद जी
स्वर्गवास दि. 16.01.2018

स्व. श्रीमती पदम
पत्नी श्री हेमचंद्र जी
स्वर्गवास दि. 30.01.2018

स्व. श्रीमती गीता
पत्नी डॉ. दिवाकरनाथ जी
स्वर्गवास दि. 26.01.2012

श्रद्धावनत

सर्वश्री हेमचन्द्र, डॉ. दिवाकर नाथ, भरत चन्द्र, सुभाष चंद्र, सर्वेश चंद्र, हृदय कान्त, मोहन, विवेक चंद्र, पवन कुमार, मनीष , मोहिल एवं हितेष
श्रीमती उषा, रेखा, अंजू, प्रतिभा,चित्रा मनीषा
एवं समस्त जौनमाने परिवार पुरा कन्हैरा

(र.क्र. 2021/793)

With Best Compliments From

OM SHELLAC UDYOG

Lakh

Lakh Dana

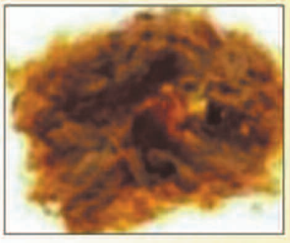
Lakh Chapda

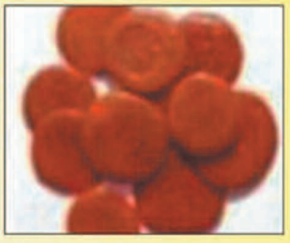
Lakh Batan

Sandeep Agrawal
Prasun Agrawal

Bongabari,
P.O. Vivekanand Nagar,
Purulia, (W.B.) Pin : 723147
Contact No. : 9933617121,
8250431735, 8910342694

(र.क्र. 2021/800)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' जनवरी 2022

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

Dr. Satish Jhaulal Chaturvedi
Chairman,
D. Lit. Ph.D. M A (Political Science)
M A (History) M A (Hindi Literature)
L L.B.

नए रंग हों नयी उमंगें आँखों में उल्लास नया,
नए गगन को छू लेने का मन में हो विश्वास नया,
नए वर्ष में चलो पुराने मौसम का हम बदलें रंग,
नयी बहारें लेकर आये जीवन में मधुमास नया,

नव वर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएं

Smt Abha Satish Chaturvedi
Secretary

Shri Samir Satish Chaturvedi
Smt Pallavi Samir Chaturvedi

Shri Dushyant Satish Chaturvedi
Dairector G.B. & MLC.
Maharashtra Govt.

Smt Sheetal Dushyant Chaturvedi
Director

Lokmanya Tilak Jankalyan Shikshan Sanstha, Nagpur
Family

(र.क्र. 2021/746) 3/12